قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

يَعتَذِرُونَ

पारा - 11

eParah

يَعْتَذِرُوْنَ	اِلَيْكُمْ	اِذَا	رَجَعْتُمْ	اِلَيْهِمْ ؕ	قُلْ	لَّا تَعْتَذِرُوْا
वो उज़र पेश करेंगे	तरफ़ तुम्हारे	जब	लौटोगे तुम	तरफ़ उनके	कह दीजिए	ना तुम उज़र पेश करो

لَنْ	نُّؤْمِنَ	لَكُمْ	قَدْ	نَبَّاَنَا	اللّٰهُ	مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ	وَسَيَرَى
हरगिज़ नहीं	हम ऐतबार करेंगे	तुम्हारा	तहक़ीक़	बता दीं हमें	अल्लाह ने	बाज़ ख़बरें तुम्हारी	और अनक़रीब देखेगा

اللّٰهُ	عَمَلَكُمْ	وَرَسُوْلُهٗ	ثُمَّ	تُرَدُّوْنَ	اِلٰى عٰلِمِ	الْغَيْبِ
अल्लाह	अमल तुम्हारा	और उसका रसूल (भी)	फिर	तुम लौटाए जाओगे	तरफ़ जानने वाले	ग़ैब

وَالشَّهَادَةِ	فَيُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿94﴾	سَيَحْلِفُوْنَ
और हाज़िर के	फिर वो बताएगा तुम्हें	वो जो	थे तुम	तुम अमल करते	अनक़रीब वो क़समें खाऐंगे

بِاللّٰهِ	لَكُمْ	اِذَا	انْقَلَبْتُمْ	اِلَيْهِمْ	لِتُعْرِضُوْا	عَنْهُمْ ؕ	فَاَعْرِضُوْا
अल्लाह की	तुम्हारे लिए	जब	लौटोगे तुम	तरफ़ उनके	ताकि तुम ऐराज़ करो	उनसे	तो ऐराज़ कर लो

عَنْهُمْ ؕ	اِنَّهُمْ	رِجْسٌ ۙ	وَّمَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ۚ	جَزَآءًۢ	بِمَا
उनसे	क्योंकि वो	गंदगी हैं	और ठिकाना उनका	जहन्नम है	बदला है	उसका जो

كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ ﴿95﴾	يَحْلِفُوْنَ	لَكُمْ	لِتَرْضَوْا	عَنْهُمْ ۚ	فَاِنْ
हैं वो	वो कमाई करते	वो क़समें खाऐंगे	तुम्हारे लिए	ताकि तुम राज़ी हो जाओ	उनसे	फिर अगर

تَرْضَوْا	عَنْهُمْ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَرْضٰى	عَنِ الْقَوْمِ	الْفٰسِقِيْنَ ﴿96﴾
तुम राज़ी हो भी जाओ	उनसे	तो बेशक	अल्लाह	नहीं वो राज़ी होता	उन लोगों से	जो फ़ासिक़ हैं

اَلْاَعْرَابُ	اَشَدُّ	كُفْرًا	وَّنِفَاقًا	وَّاَجْدَرُ	اَلَّا	يَعْلَمُوْا	حُدُوْدَ
देहाती/बदवी	ज़्यादा सख़्त हैं	कुफ़्र	और निफ़ाक़ में	और ज़्यादा लायक़ हैं	कि ना	वो जानें	हुदूद को

مَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ ﴿97﴾
उसकी जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	अपने रसूल पर	और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	बहुत हिक्मत वाला है

وَمِنَ الْاَعْرَابِ	مَنْ	يَّتَّخِذُ	مَا	يُنْفِقُ	مَغْرَمًا	وَّيَتَرَبَّصُ
और देहातियों/बदवियों में से	कोई है जो	बना लेता है	उसे जो	वो ख़र्च करता है	तावान	और वो इन्तिज़ार करता है

بِكُمُ	الدَّوَآئِرَ ط	عَلَيْهِمْ	دَآئِرَةُ	السَّوْءِ ط	وَاللّٰهُ	سَمِيْعٌ
तुम्हारे बारे में	गर्दिशों का	उन पर है	गर्दिश	बुरी	और अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है

عَلِيْمٌ 98	وَمِنَ الْاَعْرَابِ	مَنْ	يُّؤْمِنُ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
ख़ूब जानने वाला है	और देहातियों/बदवियों में से	कोई है जो	ईमान रखता है	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर

وَيَتَّخِذُ	مَا	يُنْفِقُ	قُرُبٰتٍ	عِنْدَ اللّٰهِ	وَصَلَوٰتِ	الرَّسُوْلِ ط
और वो बना लेता है	उसे जो	वो ख़र्च करता है	क़ुरबतों (का ज़रिया)	अल्लाह के नज़दीक	और दुआओं का	रसूल की

اَلَآ	اِنَّهَا	قُرْبَةٌ	لَّهُمْ ط	سَيُدْخِلُهُمُ	اللّٰهُ	فِيْ رَحْمَتِهٖ ط
ख़बरदार	बेशक वो	क़ुरबत (का ज़रिया) है	उनके लिए	अनक़रीब दाख़िल करेगा उन्हें	अल्लाह	अपनी रहमत में

اِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ 99 ع	وَالسّٰبِقُوْنَ	الْاَوَّلُوْنَ
बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	बहुत रहम करने वाला है	और सबक़त करने वाले	सबसे पहले

ع 12 10 1

مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ	وَالْاَنْصَارِ	وَالَّذِيْنَ	اتَّبَعُوْهُمْ	بِاِحْسَانٍ لا
मुहाजिरीन में से	और अंसार में से	और वो जिन्होंने	पैरवी की उनकी	साथ एहसान के

رَّضِيَ	اللّٰهُ	عَنْهُمْ	وَرَضُوْا	عَنْهُ	وَاَعَدَّ	لَهُمْ	جَنّٰتٍ
राज़ी हो गया	अल्लाह	उनसे	और वो राज़ी हो गए	उससे	और उसने तैयार कर रखा है	उनके लिए	बाग़ात को

تَجْرِيْ	تَحْتَهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ	اَبَدًا ط	ذٰلِكَ	الْفَوْزُ
बहती हैं	नीचे उनके	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें	हमेशा हमेशा	यही है	कामयाबी

الْعَظِيْمُ 100	وَمِمَّنْ	حَوْلَكُمْ	مِّنَ الْاَعْرَابِ	مُنٰفِقُوْنَ ط
बहुत बड़ी	और उनमें से जो	तुम्हारे आस-पास हैं	देहातियों/बदवियों में से	कुछ मुनाफ़िक़ हैं

ع 5

نَحْنُ	لَا تَعْلَمُهُمْ ط	عَلَى النِّفَاقِ قف	مَرَدُوْا	الْمَدِيْنَةِ قف	وَمِنْ اَهْلِ
हम	नहीं तुम जानते उन्हें	मुनाफ़िक़त पर	जो अड़ गए हैं	मदीना के	और कुछ रहने वालों में से

اِلٰى عَذَابٍ	يُرَدُّوْنَ	ثُمَّ	مَّرَّتَيْنِ	سَنُعَذِّبُهُمْ	نَعْلَمُهُمْ ط
तरफ़ अज़ाब	वो लौटाए जाएंगे	फिर	दो बार	अनक़रीब हम अज़ाब देंगे उन्हें	जानते हैं उन्हें

عَمَلًا	خَلَطُوْا	بِذُنُوْبِهِمْ	اعْتَرَفُوْا	وَاٰخَرُوْنَ	عَظِيْمٍ (101) ج
कुछ अमल	उन्होंने मिला दिए	अपने गुनाहों का	जिन्होंने ऐतराफ किया	और कुछ दूसरे	बहुत बड़े के

اِنَّ	عَلَيْهِمْ ط	يَّتُوْبَ	اَنْ	اللّٰهُ	عَسَى	سَيِّئًا ط	وَّاٰخَرَ	صَالِحًا
बेशक	उन पर	वो मेहरबान हो	कि	अल्लाह	उम्मीद है	बुरे	और दूसरे	नेक

تُطَهِّرُهُمْ	صَدَقَةً	مِنْ اَمْوَالِهِمْ	خُذْ	رَّحِيْمٌ (102)	غَفُوْرٌ	اللّٰهَ
आप पाक कीजिए उन्हें	सदक़ा	उनके मालों में से	ले लीजिए	निहायत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने वाला है	अल्लाह

سَكَنٌ	صَلٰوتَكَ	اِنَّ	عَلَيْهِمْ ط	وَصَلِّ	بِهَا	وَتُزَكِّيْهِمْ
सुकून का ज़रिया है	दुआ आपकी	बेशक	उनके हक़ में	और दुआए रहमत कीजिए	साथ उसके	और आप तज़किया कीजिए उनका

اللّٰهَ	اَنَّ	يَعْلَمُوْٓا	اَلَمْ	عَلِيْمٌ (103)	سَمِيْعٌ	وَاللّٰهُ	لَّهُمْ ط
अल्लाह	बेशक	वो जानते	क्या नहीं	ख़ूब जानने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है	और अल्लाह	उनके लिए

وَاَنَّ	الصَّدَقٰتِ	وَيَاْخُذُ	عَنْ عِبَادِهٖ	التَّوْبَةَ	يَقْبَلُ	هُوَ
और बेशक	सदक़ात	और वो ले लेता है	अपने बंदों से	तौबा को	वो क़ुबूल करता है	वो ही

فَسَيَرَى	اعْمَلُوْا	وَقُلِ	الرَّحِيْمُ (104)	التَّوَّابُ	هُوَ	اللّٰهَ
पस अनक़रीब देखेगा	अमल करो	और कह दीजिए	निहायत रहम करने वाला	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला	वो ही है	अल्लाह

اِلٰى عٰلِمِ	وَسَتُرَدُّوْنَ	وَالْمُؤْمِنُوْنَ ط	وَرَسُوْلُهٗ	عَمَلَكُمْ	اللّٰهُ
तरफ़ जानने वाले	और अनक़रीब तुम लौटाए जाओगे	और अहले ईमान भी	और रसूल उसका	अमल तुम्हारा	अल्लाह

الْغَيْبِ	وَالشَّهَادَةِ	فَيُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿105﴾ ج	وَاٰخَرُوْنَ
ग़ैब	और हाज़िर के	फिर वो बताएगा तुम्हें	वो जो	थे तुम	तुम अमल करते	और कुछ दूसरे

مُرْجَوْنَ	لِاَمْرِ	اللّٰهِ	اِمَّا	يُعَذِّبُهُمْ	وَاِمَّا	يَتُوْبُ	عَلَيْهِمْ ؕ
जो मुअख़्ख़र हैं	हुक्म के लिए	अल्लाह के	ख़्वाह	वो अज़ाब दे उन्हें	और ख़्वाह	वो मेहरबान हो	उन पर

وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ ﴿106﴾	وَالَّذِيْنَ	اتَّخَذُوْا	مَسْجِدًا	ضِرَارًا	
और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	बहुत हिक्मत वाला है	और वो जिन्होंने	बना ली	एक मस्जिद	ज़रर पहुंचाने के लिए	

وَّكُفْرًا	وَّتَفْرِيْقًا	بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	وَاِرْصَادًا	لِّمَنْ
और कुफ़्र के लिए	और जुदाई डालने के लिए	दर्मियान ईमान वालों के	और घात लगाने के लिए	उस शख़्स के लिए जिसने

حَارَبَ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	مِنْ قَبْلُ ؕ	وَلَيَحْلِفُنَّ	اِنْ	اَرَدْنَآ
जंग की	अल्लाह से	और उसके रसूल से	इससे पहले	और अलबत्ता वो ज़रूर क़समें खाऐंगे	नहीं	इरादा किया था हमने

اِلَّا	الْحُسْنٰى ؕ	وَاللّٰهُ	يَشْهَدُ	اِنَّهُمْ	لَكٰذِبُوْنَ ﴿107﴾	لَا تَقُمْ
मगर	भलाई का	और अल्लाह	वो गवाही देता है	बेशक वो	अलबत्ता झूठे हैं	ना आप खड़े हों

فِيْهِ	اَبَدًا ؕ	لَمَسْجِدٌ	اُسِّسَ	عَلَى التَّقْوٰى	مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ
इसमें	कभी भी	अलबत्ता मस्जिद	जिसकी बुनियाद रखी गई	तक़वा पर	पहले दिन से

اَحَقُّ	اَنْ	تَقُوْمَ	فِيْهِ ؕ	فِيْهِ	رِجَالٌ	يُّحِبُّوْنَ	اَنْ
ज़्यादा हक़दार है	कि	आप खड़े हों	उसमें	उसमें	कुछ लोग हैं	जो पसंद करते हैं	कि

يَّتَطَهَّرُوْا ؕ	وَاللّٰهُ	يُحِبُّ	الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿108﴾	اَفَمَنْ	اَسَّسَ	بُنْيَانَهٗ
वो पाक साफ़ रहें	और अल्लाह	वो पसंद करता है	पाक साफ़ रहने वालों को	क्या भला जिसने	बुनियाद रखी	अपनी इमारत की

عَلٰى تَقْوٰى	مِنَ اللّٰهِ	وَرِضْوَانٍ	خَيْرٌ	اَمْ	مَّنْ	اَسَّسَ	بُنْيَانَهٗ
तक़वा पर	अल्लाह की तरफ़ से	और रज़ामंदी पर	बेहतर है	या	जिसने	बुनियाद रखी	अपनी इमारत की

عَلٰى شَفَا	جُرُفٍ	هَارٍ	فَانْهَارَ	بِهٖ	فِىْ نَارِ	جَهَنَّمَ ؕ	وَاللّٰهُ
एक किनारे पर	खाई	गिरने वाली की	तो वो ले गिरी	उसे	आग में	जहन्नम की	और अल्लाह

لَا يَهْدِى	الْقَوْمَ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿109﴾	لَا يَزَالُ	بُنْيَانُهُمُ	الَّذِىْ	بَنَوْا
नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को	जो ज़ालिम हैं	हमेशा रहेगी	इमारत उनकी	वो जो	उन्होंने बनाई

رِيْبَةً	فِىْ قُلُوْبِهِمْ	اِلَّآ	اَنْ	تَقَطَّعَ	قُلُوْبُهُمْ ؕ	وَاللّٰهُ
शक का सबब	उनके दिलों में	मगर	ये कि	टुकड़े-टुकड़े हो जाऐं	दिल उनके	और अल्लाह

ع 13 11 2

عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ ﴿110﴾ ع	اِنَّ	اللّٰهَ	اشْتَرٰى	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	اَنْفُسَهُمْ
ख़ूब जानने वाला है	बहुत हिक्मत वाला है	बेशक	अल्लाह ने	ख़रीद लीं	मोमिनों से	जानें उनकी

وَاَمْوَالَهُمْ	بِاَنَّ	لَهُمُ	الْجَنَّةَ ؕ	يُقَاتِلُوْنَ	فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
और माल उनके	बवजह इसके कि	उनके लिए	जन्नत है	वो जंग करते हैं	अल्लाह के रास्ते में

فَيَقْتُلُوْنَ	وَيُقْتَلُوْنَ ۖ	وَعْدًا	عَلَيْهِ	حَقًّا	فِى التَّوْرٰىةِ
फिर वो मारते हैं	और वो मारे जाते हैं	वादा है	उसके ज़िम्मे	सच्चा	तौरात में

وَالْاِنْجِيْلِ	وَالْقُرْاٰنِ ؕ	وَمَنْ	اَوْفٰى	بِعَهْدِهٖ	مِنَ اللّٰهِ
और इंजील	और क़ुरआन में	और कौन	ज़्यादा पूरा करने वाला है	अपने अहद को	अल्लाह से

فَاسْتَبْشِرُوْا	بِبَيْعِكُمُ	الَّذِىْ	بَايَعْتُمْ	بِهٖ ؕ	وَذٰلِكَ	هُوَ
पस ख़ुशियां मनाओ	अपने सौदे पर	वो जो	सौदा किया तुमने	साथ उसके	और ये	वो ही है

الْفَوْزُ	الْعَظِيْمُ ﴿111﴾	اَلتَّآئِبُوْنَ	الْعٰبِدُوْنَ	الْحٰمِدُوْنَ	السَّآئِحُوْنَ
कामयाबी	बहुत बड़ी	जो तौबा करने वाले	इबादत करने वाले	हम्द करने वाले	सियाहत करने वाले

الرّٰكِعُوْنَ	السّٰجِدُوْنَ	الْاٰمِرُوْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَالنَّاهُوْنَ
रुकू करने वाले	सज्दा करने वाले	हुक्म देने वाले	नेकी का	और रोकने वाले

عَنِ الۡمُنۡكَرِ	وَالۡحٰفِظُوۡنَ	لِحُدُوۡدِ اللّٰهِ ؕ	وَبَشِّرِ	الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿112﴾
बुराई से	और हिफ़ाज़त करने वाले हैं	अल्लाह की हुदूद की	और ख़ुश ख़बरी दे दीजिए	मोमिनों को

مَا	كَانَ	لِلنَّبِيِّ	وَالَّذِيۡنَ	اٰمَنُوۡۤا	اَنۡ	يَّسۡتَغۡفِرُوۡا	لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ
नहीं	है (लायक़)	नबी के	और उनके	जो ईमान लाए	कि	वो बख़्शिश मांगें	मुशरिकीन के लिए

وَلَوۡ	كَانُوۡۤا	اُولِىۡ قُرۡبٰى	مِنۡۢ بَعۡدِ	مَا	تَبَيَّنَ	لَهُمۡ	اَنَّهُمۡ
और अगरचे	हों वो	क़राबत वाले	बाद इसके	जो	वाज़ेह हो गया	उनके लिए	कि बेशक वो

اَصۡحٰبُ	الۡجَحِيۡمِ ﴿113﴾	وَمَا	كَانَ	اسۡتِغۡفَارُ	اِبۡرٰهِيۡمَ	لِاَبِيۡهِ
साथी हैं	जहन्नम के	और ना	था	इस्तग़फ़ार करना	इब्राहीम का	अपने बाप के लिए

اِلَّا	عَنۡ مَّوۡعِدَةٍ	وَّعَدَهَاۤ	اِيَّاهُ ۚ	فَلَمَّا	تَبَيَّنَ	لَهٗۤ	اَنَّهٗ
मगर	एक वादे की वजह से	उसने वादा किया उसका	उस से	फिर जब	ज़ाहिर हो गया	उसके लिए	कि बेशक वो

عَدُوٌّ	لِّلّٰهِ	تَبَرَّاَ	مِنۡهُ ؕ	اِنَّ	اِبۡرٰهِيۡمَ	لَاَوَّاهٌ
दुश्मन है	अल्लाह का	वो बेज़ार हो गया	उससे	बेशक	इब्राहीम	अलबत्ता बहुत आह व ज़ारी करने वाला

حَلِيۡمٌ ﴿114﴾	وَمَا	كَانَ	اللّٰهُ	لِيُضِلَّ	قَوۡمًا	بَعۡدَ	اِذۡ
बहुत बुर्दबार था	और नहीं	है	अल्लाह	कि वो भटका दे	किसी क़ौम को	बाद इसके	जब

هَدٰىهُمۡ	حَتّٰى	يُبَيِّنَ	لَهُمۡ	مَّا	يَتَّقُوۡنَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
उसने हिदायत दी उन्हें	यहां तक कि	वो वाज़ेह कर दे	उनके लिए	वो जिससे	वो बचें	बेशक	अल्लाह

بِكُلِّ	شَىۡءٍ	عَلِيۡمٌ ﴿115﴾	اِنَّ	اللّٰهَ	لَهٗ	مُلۡكُ	السَّمٰوٰتِ
हर	चीज़ का	ख़ूब इल्म रखने वाला है	बेशक	अल्लाह	उसी के लिए है	बादशाहत	आसमानों

وَالۡاَرۡضِ ؕ	يُحۡىٖ	وَيُمِيۡتُ ؕ	وَمَا	لَكُمۡ	مِّنۡ دُوۡنِ	اللّٰهِ	مِنۡ وَّلِىٍّ
और ज़मीन की	वो ज़िंदा करता है	और वो मौत देता है	और नहीं	तुम्हारे लिए	सिवाए	अल्लाह के	कोई दोस्त

وَّلَا	نَصِيْرٍ ﴿116﴾	لَقَدْ	تَّابَ	اللّٰهُ	عَلَى النَّبِيِّ	وَالْمُهٰجِرِيْنَ
और ना	कोई मददगार	अलबत्ता तहक़ीक	मेहरबान हुआ	अल्लाह	नबी पर	और मुहाजिरीन

وَالْاَنْصَارِ	الَّذِيْنَ	اتَّبَعُوْهُ	فِيْ سَاعَةِ	الْعُسْرَةِ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا كَادَ
और अंसार पर	जिन्होंने	पैरवी की उसकी	घड़ी में	तंगी की	बाद इसके	जो क़रीब था कि

يَّزِيْغُ	قُلُوْبُ	فَرِيْقٍ	مِّنْهُمْ	ثُمَّ	تَابَ	عَلَيْهِمْ ؕ	اِنَّهٗ
टेढ़े हो जाते	दिल	एक गिरोह के	उनमें से	फिर	वो मेहरबान हुआ	उन पर	बेशक वो

بِهِمْ	رَءُوْفٌ	رَّحِيْمٌ ﴿117﴾	وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ	الَّذِيْنَ	خُلِّفُوْا ؕ
उन पर	बहुत शफ़क़त करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और इन तीनों पर(भी)	जो	छोड़ दिए गए

حَتّٰۤى	اِذَا	ضَاقَتْ	عَلَيْهِمُ	الْاَرْضُ	بِمَا	رَحُبَتْ	وَضَاقَتْ
यहां तक कि	जब	तंग हो गई	उन पर	ज़मीन	बावजूद इसके	कि वो कुशादा थी	और तंग हो गए

عَلَيْهِمْ	اَنْفُسُهُمْ	وَظَنُّوْۤا	اَنْ	لَّا مَلْجَاَ	مِنَ اللّٰهِ	اِلَّاۤ	اِلَيْهِ ؕ
उन पर	नफ़्स उनके	और उन्होंने यक़ीन कर लिया	कि	नहीं कोई जाए पनाह	अल्लाह से	मगर	तरफ़ उसी के

ثُمَّ	تَابَ	عَلَيْهِمْ	لِيَتُوْبُوْا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	التَّوَّابُ
फिर	वो मेहरबान हुआ	उन पर	ताकि वो तौबा करें	बेशक	अल्लाह	वो ही है	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला

ع 14 8 3

الرَّحِيْمُ ﴿118﴾ ع	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اتَّقُوا	اللّٰهَ	وَكُوْنُوْا	مَعَ
निहायत रहम करने वाला	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	डरो	अल्लाह से	और हो जाओ	साथ

الصّٰدِقِيْنَ ﴿119﴾	مَا	كَانَ	لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ	وَمَنْ	حَوْلَهُمْ
सच्चे लोगों के	ना	था	मदीना वालों के (लायक़)	और उनके जो	उनके आस पास थे

مِّنَ الْاَعْرَابِ	اَنْ	يَّتَخَلَّفُوْا	عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ	وَلَا	يَرْغَبُوْا
देहातियों/बदवियों में से	कि	वो पीछे रह जाऐं	अल्लाह के रसूल से	और ना	कि वो रग़बत रखें

بِأَنْفُسِهِمْ	عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ	ذٰلِكَ	بِأَنَّهُمْ	لَا يُصِيبُهُمْ	ظَمَأٌ	وَّلَا
अपनी जानों की	आपकी जान से(ज़्यादा)	ये	बवजह इसके कि वो	नहीं पहुंचती उन्हें	कोई प्यास	और ना

نَصَبٌ	وَّلَا	مَخْمَصَةٌ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَلَا	يَطَـُٔوْنَ	مَوْطِئًا
कोई थकावट	और ना	कोई भूख	अल्लाह के रास्ते में	और नहीं	वो रौंदते	किसी जगह को

يَّغِيْظُ	الْكُفَّارَ	وَلَا	يَنَالُوْنَ	مِنْ عَدُوٍّ	نَّيْلًا	إِلَّا	كُتِبَ
जो ग़ुस्सा दिलाए	कुफ़्फ़ार को	और नहीं	वो हासिल करते	दुश्मन पर	कोई कामयाबी	मगर	लिखा जाता है

لَهُمْ	بِهٖ	عَمَلٌ	صَالِحٌ ؕ	إِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُضِيْعُ	أَجْرَ
उनके लिए	साथ इसके	अमल	नेक	बेशक	अल्लाह	नहीं वो ज़ाया करता	अज्र

الْمُحْسِنِيْنَ ۙ﴿120﴾	وَلَا	يُنْفِقُوْنَ	نَفَقَةً	صَغِيْرَةً	وَّلَا	كَبِيْرَةً	وَّلَا
नेको कारों का	और नहीं	वो ख़र्च करते	कोई ख़र्च करना	छोटा	और ना	बड़ा	और नहीं

يَقْطَعُوْنَ	وَادِيًا	إِلَّا	كُتِبَ	لَهُمْ	لِيَجْزِيَهُمُ	اللّٰهُ	أَحْسَنَ
वो तैय करते	कोई वादी	मगर	लिखा जाता है (अजर)	उनके लिए	ताकि बदला दे उन्हें	अल्लाह	बहुत अच्छा

مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿121﴾	وَمَا	كَانَ	الْمُؤْمِنُوْنَ	لِيَنْفِرُوْا	كَآفَّةً ؕ
उसका जो	थे वो	वो अमल करते	और नहीं	है	मोमिनों के (लायक़)	कि वो निकल पड़ें	सारे के सारे

فَلَوْلَا	نَفَرَ	مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ	مِّنْهُمْ	طَآئِفَةٌ	لِّيَتَفَقَّهُوْا
फिर क्यों ना	निकली	हर गिरोह से	उनमें से	एक जमाअत	ताकि वो समझ बूझ हासिल करें

فِي الدِّيْنِ	وَلِيُنْذِرُوْا	قَوْمَهُمْ	إِذَا	رَجَعُوْٓا	إِلَيْهِمْ	لَعَلَّهُمْ
दीन में	और ताकि वो डराएं	अपनी क़ौम को	जब	वो लौटें	तरफ़ उनके	ताकि वो

يَحْذَرُوْنَ ﴿122﴾ ع	يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	قَاتِلُوا	الَّذِيْنَ	يَلُوْنَكُمْ
वो डरें	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	जंग करो	उनसे जो	तुम्हारे आस पास हैं

ع 15 4 4

مِّنَ الْكُفَّارِ	وَلْيَجِدُوْا	فِيْكُمْ	غِلْظَةً ؕ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ
कुफ़्फ़ार में से	और चाहिए कि वो पाऐं	तुम में	सख़्ती	और जान लो	बेशक	अल्लाह

مَعَ	الْمُتَّقِيْنَ ﴿123﴾	وَاِذَا مَآ	اُنْزِلَتْ	سُوْرَةٌ	فَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّقُوْلُ
साथ है	मुत्तक़ी लोगों के	और जब भी	नाज़िल की जाती है	कोई सूरत	तो उनमें से कोई है	जो	कहता है

ع ۱۱

اَيُّكُمْ	زَادَتْهُ	هٰذِهٖٓ	اِيْمَانًا ۚ	فَاَمَّا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
कौन है तुम में	ज़्यादा किया उसको	इस (सूरत) ने	ईमान में	तो रहे	वो जो	ईमान लाए

فَزَادَتْهُمْ	اِيْمَانًا	وَّهُمْ	يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿124﴾	وَاَمَّا	الَّذِيْنَ
तो उसने ज़्यादा कर दिया उन्हें	ईमान में	और वो	वो ख़ुश होते हैं	और रहे	वो लोग

فِيْ قُلُوْبِهِمْ	مَّرَضٌ	فَزَادَتْهُمْ	رِجْسًا	اِلٰى رِجْسِهِمْ	وَمَاتُوْا
दिलों में जिनके	मर्ज़ है	तो उसने ज़्यादा कर दिया उन्हें	नजासत में	तरफ़ उनकी नजासत के	और वो मर गए

وَهُمْ	كٰفِرُوْنَ ﴿125﴾	اَوَلَا	يَرَوْنَ	اَنَّهُمْ	يُفْتَنُوْنَ	فِيْ كُلِّ عَامٍ
इस हाल में कि वो	काफ़िर थे	क्या भला नहीं	वो देखते	कि बेशक वो	आज़माए जाते हैं	हर साल में

مَّرَّةً	اَوْ	مَّرَّتَيْنِ	ثُمَّ	لَا يَتُوْبُوْنَ	وَلَا	هُمْ	يَذَّكَّرُوْنَ ﴿126﴾
एक बार	या	दो बार	फिर	नहीं वो तौबा करते	और ना	वो	वो नसीहत पकड़ते

وَاِذَا مَآ	اُنْزِلَتْ	سُوْرَةٌ	نَّظَرَ	بَعْضُهُمْ	اِلٰى بَعْضٍ ؕ	هَلْ
और जब भी	नाज़िल की जाती है	कोई सूरत	देखता है	बाज़ उनका	तरफ़ बाज़ के	क्या

يَرٰىكُمْ	مِّنْ اَحَدٍ	ثُمَّ	انْصَرَفُوْا ؕ	صَرَفَ	اللّٰهُ	قُلُوْبَهُمْ
देख रहा है तुम्हें	कोई एक	फिर	वो फिर जाते हैं	फेर दिया	अल्लाह ने	उनके दिलों को

بِاَنَّهُمْ	قَوْمٌ	لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿127﴾	لَقَدْ	جَآءَكُمْ	رَسُوْلٌ	مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
बवजह इसके कि वो	ऐसे लोग हैं	नहीं वो समझते	अलबत्ता तहक़ीक़	आ गया तुम्हारे पास	एक रसूल	तुम्हारे नफ़्सों में से

بِالْمُؤْمِنِيْنَ	عَلَيْكُمْ	حَرِيْصٌ	مَا عَنِتُّمْ	عَلَيْهِ	عَزِيْزٌ
मोमिनों पर	तुम पर(भलाई का)	हरीस है	कि मशक़्क़त में पड़ो तुम	उस पर	गिरां है

لَآ	اللّٰهُ ۖ قلے	حَسْبِيَ	فَقُلْ	تَوَلَّوْا	فَاِنْ	رَّحِيْمٌ (128)	رَءُوْفٌ
नहीं	अल्लाह	काफ़ी है मुझे	तो कह दीजिए	वो मुंह मोड़ें	फिर अगर	निहायत रहम करने वाला है	बहुत शफ़क़त करने वाला है

الْعَظِيْمِ (129) ع	الْعَرْشِ	رَبُّ	وَهُوَ	تَوَكَّلْتُ	عَلَيْهِ	هُوَ ط	اِلَّا	اِلٰهَ
अज़ीम का	अरशे	रब है	और वो	भरोसा किया मैंने	उसी पर	वो ही	मगर	कोई इलाह(बरहक़)

ع 16 7 5

رُكُوْعَاتُهَا : 11 — 51 سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ 10 — اٰيَاتُهَا : 109

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِلنَّاسِ	اَكَانَ	الْحَكِيْمِ (1)	الْكِتٰبِ	اٰيٰتُ	تِلْكَ	الٓرٰ قف
लोगों के लिए	क्या है	हिक्मत वाली की	किताब	आयात हैं	ये	الر

منزل 3

النَّاسَ	اَنْذِرِ	اَنْ	مِّنْهُمْ	اِلٰى رَجُلٍ	اَوْحَيْنَآ	اَنْ	عَجَبًا
लोगों को	डराइए	कि	उनमें से	तरफ़ एक शख़्स के	वही की हमने	कि	अजीब बात

عِنْدَ	صِدْقٍ	قَدَمَ	لَهُمْ	اَنَّ	اٰمَنُوْٓا	الَّذِيْنَ	وَبَشِّرِ
पास	सच्चा	मर्तबा है	उनके लिए	कि बेशक	ईमान लाए	उन्हें जो	और ख़ुश ख़बरी दे दीजिए

اِنَّ	مُّبِيْنٌ (2)	لَسٰحِرٌ	هٰذَا	اِنَّ	الْكٰفِرُوْنَ	قَالَ	رَبِّهِمْ ط
बेशक	खुल्लम-खुल्ला	अलबत्ता जादूगर है	ये	बेशक	काफ़िरों ने	कहा	उनके रब के

وقف النبی ﷺ

فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	الَّذِيْ	اللّٰهُ	رَبَّكُمُ
छ:दिनों में	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	जिसने	अल्लाह है	रब तुम्हारा

اِلَّا	مِنْ شَفِيْعٍ	مَا	الْاَمْرَ ط	يُدَبِّرُ	عَلَى الْعَرْشِ	اسْتَوٰى	ثُمَّ
मगर	कोई सिफ़ारशी	नहीं	तमाम मामलात की	वो तदबीर करता है	अर्श पर	वो बुलंद हुआ	फिर

مِنْۢ بَعْدِ	اِذْنِهٖ ؕ	ذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	رَبُّكُمْ	فَاعْبُدُوْهُ ؕ	اَفَلَا
बाद	उसके इज़्न के	यही है	अल्लाह	रब तुम्हारा	पस इबादत करो उसकी	क्या भला नहीं

تَذَكَّرُوْنَ ③	اِلَيْهِ	مَرْجِعُكُمْ	جَمِيْعًا ؕ	وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقًّا ؕ	اِنَّهٗ
तुम नसीहत पकड़ते	तरफ़ उसी के	लौटना है तुम्हारा	सब के सब का	वादा है	अल्लाह का	सच्चा	बेशक वो

يَبْدَؤُا	الْخَلْقَ	ثُمَّ	يُعِيْدُهٗ	لِيَجْزِيَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا
वो इब्तिदा करता है	पैदाइश की	फिर	वो दोबारा लौटाएगा उसे	ताकि वो बदला दे	उन्हें जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए

الصّٰلِحٰتِ	بِالْقِسْطِ ؕ	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَهُمْ	شَرَابٌ	مِّنْ حَمِيْمٍ
नेक	साथ इंसाफ़ के	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	उनके लिए	पीना है	सख़्त गर्म पानी का

وَّعَذَابٌ	اَلِيْمٌ	بِمَا	كَانُوْا	يَكْفُرُوْنَ ④	هُوَ	الَّذِيْ	جَعَلَ
और अज़ाब है	दर्दनाक	बवजह उसके जो	थे वो	वो कुफ़्र करते	वो ही है	जिसने	बनाया

الشَّمْسَ	ضِيَآءً	وَّالْقَمَرَ	نُوْرًا	وَّقَدَّرَهٗ	مَنَازِلَ	لِتَعْلَمُوْا
सूरज को	रोशन	और चांद को	मुनव्वर	और उसने मुक़र्रर कीं उसकी	मंज़िलें	ताकि तुम जान लो

عَدَدَ	السِّنِيْنَ	وَالْحِسَابَ ؕ	مَا	خَلَقَ	اللّٰهُ	ذٰلِكَ	اِلَّا
गिनती	सालों की	और हिसाब	नहीं	पैदा किया	अल्लाह ने	ये (सब)	मगर

بِالْحَقِّ ۚ	يُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يَّعْلَمُوْنَ ⑤	اِنَّ	فِي اخْتِلَافِ
साथ हक़ के	वो खोल कर बयान करता है	आयात को	उन लोगों के लिए	जो इल्म रखते हैं	बेशक	इख़्तिलाफ़ में

الَّيْلِ	وَالنَّهَارِ	وَمَا	خَلَقَ	اللّٰهُ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	لَاٰيٰتٍ
रात	और दिन के	और जो	पैदा किया	अल्लाह ने	आसमानों में	और ज़मीन में	अलबत्ता निशानिया हैं

لِّقَوْمٍ	يَّتَّقُوْنَ ⑥	اِنَّ	الَّذِيْنَ	لَا يَرْجُوْنَ	لِقَآءَنَا
उन लोगों के लिए	जो डरते हैं	बेशक	वो लोग जो	नहीं वो उम्मीद रखते	हमारी मुलाक़ात की

وَرَضُوْا	بِالْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَاطْمَاَنُّوْا	بِهَا	وَالَّذِيْنَ	هُمْ
और वो राज़ी हो गए	ज़िंदगी पर	दुनिया की	और वो मुत्मइन हो गए	उस पर	और वो जो	वो

عَنْ اٰيٰتِنَا	غٰفِلُوْنَ ۙ﴿7﴾	اُولٰٓئِكَ	مَاْوٰىهُمُ	النَّارُ	بِمَا	كَانُوْا
हमारी आयात से	ग़ाफ़िल हैं	यही लोग हैं	ठिकाना उनका	आग है	बवजह उसके जो	थे वो

يَكْسِبُوْنَ ﴿8﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	يَهْدِيْهِمْ
वो कमाई करते	बेशक	वो लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	रहनुमाई करेगा उनकी

رَبُّهُمْ	بِاِيْمَانِهِمْ ۚ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهِمُ	الْاَنْهٰرُ	فِيْ جَنّٰتِ
रब उनका	बवजह उनके ईमान के	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	बाग़ात में

النَّعِيْمِ ﴿9﴾	دَعْوٰىهُمْ	فِيْهَا	سُبْحٰنَكَ	اللّٰهُمَّ	وَتَحِيَّتُهُمْ	فِيْهَا
नेअमतों वाले	उनकी दुआ (होगी)	उसमें	पाक है तू	ऐ अल्लाह	और दुआ उनकी	उसमें

سَلٰمٌ ۚ	وَاٰخِرُ	دَعْوٰىهُمْ	اَنِ	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿10﴾ ع	ع 1 10 6
सलाम (होगा)	और आख़िरी	पुकार उनकी (होगी)	ये कि	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जो रब है	तमाम जहानों का	

وَلَوْ	يُعَجِّلُ	اللّٰهُ	لِلنَّاسِ	الشَّرَّ	اسْتِعْجَالَهُمْ	بِالْخَيْرِ
और अगर	जल्दी करता	अल्लाह	लोगों के लिए	बुराई को (देने में)	(जैसे) जल्दी मांगना है उनका	भलाई को

لَقُضِيَ	اِلَيْهِمْ	اَجَلُهُمْ ؕ	فَنَذَرُ	الَّذِيْنَ	لَا يَرْجُوْنَ	لِقَآءَنَا
अलबत्ता पूरी कर दी जाए	तरफ़ उनके	मुद्दत उनकी	तो हम छोड़ देते हैं	उन्हें जो	नहीं वो उम्मीद रखते	हमारी मुलाक़ात की

فِيْ طُغْيَانِهِمْ	يَعْمَهُوْنَ ﴿11﴾	وَاِذَا	مَسَّ	الْاِنْسَانَ	الضُّرُّ	دَعَانَا
अपनी सरकशी में	वो भटकते फिरते हैं	और जब	पहुंचती है	इंसान को	तकलीफ़	वो पुकारता है हमें

لِجَنْۢبِهٖٓ	اَوْ	قَاعِدًا	اَوْ	قَآئِمًا ۚ	فَلَمَّا	كَشَفْنَا	عَنْهُ	ضُرَّهٗ
अपनी करवट पर	या	बैठे हुए	या	खड़े हुए	फिर जब	हम हटा देते हैं	उस से	तकलीफ़ उसकी

مَرَّ	كَاَنْ	لَّمْ	يَدْعُنَآ	اِلٰى ضُرٍّ	مَّسَّهٗ ؕ	كَذٰلِكَ
वो चल देता है	गोया कि	नहीं	पुकारा था उसने हमें	तरफ़ किसी तकलीफ़ के	जो पहुंची उसे	इसी तरह

زُيِّنَ	لِلْمُسْرِفِيْنَ	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ⑫	وَ لَقَدْ	اَهْلَكْنَا
मुज़य्यन कर दिए गए	हद से बढ़ने वालों के लिए	जो	थे वो	वो अमल करते	और अलबत्ता तहक़ीक़	हलाक किया हमने

الْقُرُوْنَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	لَمَّا	ظَلَمُوْا ۙ	وَ جَآءَتْهُمْ	رُسُلُهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ
उम्मतों को	तुमसे पहले	जब	उन्होंने ज़ुल्म किया	और आए उनके पास	रसूल उनके	साथ वाज़ेह निशानियों के

وَ مَا	كَانُوْا	لِيُؤْمِنُوْا ؕ	كَذٰلِكَ	نَجْزِى	الْقَوْمَ	الْمُجْرِمِيْنَ ⑬
और ना	थे वो	कि वो ईमान ले आते	इसी तरह	हम बदला देते हैं	उन लोगों को	जो मुजरिम हैं

ثُمَّ	جَعَلْنٰكُمْ	خَلٰٓئِفَ	فِى الْاَرْضِ	مِنْۢ بَعْدِهِمْ	لِنَنْظُرَ	كَيْفَ
फिर	बनाया हमने तुम्हें	जानशीन	ज़मीन में	बाद उनके	ताकि हम देखें	किस तरह

تَعْمَلُوْنَ ⑭	وَ اِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِمْ	اٰيَاتُنَا	بَيِّنٰتٍ ۙ	قَالَ
तुम अमल करते हो	और जब	पढ़ी जाती हैं	उन पर	आयात हमारी	वाज़ेह	कहते हैं

الَّذِيْنَ	لَا يَرْجُوْنَ	لِقَآءَنَا	ائْتِ	بِقُرْاٰنٍ	غَيْرِ هٰذَآ	اَوْ
वो जो	नहीं वो उम्मीद रखते	हमारी मुलाक़ात की	ले आओ	क़ुरआन	इलावा इसके	या

قُلْ	مَا	يَكُوْنُ	لِىْٓ	اَنْ	اُبَدِّلَهٗ	مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِىْ ۚ
कह दीजिए	नहीं	है	मेरे लिए	कि	मैं बदल दूं इसे	अपनी तरफ़ से

اِنْ	اَتَّبِعُ	اِلَّا	مَا	يُوْحٰٓى	اِلَىَّ ۚ	اِنِّىْٓ	اَخَافُ	اِنْ
नहीं	मैं पैरवी करता	मगर	उसकी जो	वही की जाती है	मेरी तरफ़	बेशक मैं	मैं डरता हूं	अगर

عَصَيْتُ	رَبِّىْ	عَذَابَ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑮	قُلْ	لَّوْ	شَآءَ	اللّٰهُ
नाफ़रमानी की मैंने	अपने रब की	अज़ाब से	बड़े दिन के	कह दीजिए	अगर	चाहता	अल्लाह

مَا	تَلَوْتُهٗ	عَلَيْكُمْ	وَلَآ	اَدْرٰىكُمْ	بِهٖ ۖ	فَقَدْ	لَبِثْتُ
ना	पढ़ता मैं उसे	तुम पर	और ना	(अल्लाह) ख़बर देता तुम्हें	उसकी	पस तहक़ीक़	ठहरा रहा मैं

فِيْكُمْ	عُمُرًا	مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ⑯	فَمَنْ	اَظْلَمُ	مِمَّنِ
तुम में	एक उमर	इस से पहले	क्या पस नहीं	तुम अक़्ल रखते	तो कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जो

افْتَرٰى	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	اَوْ	كَذَّبَ	بِاٰيٰتِهٖ ؕ	اِنَّهٗ	لَا يُفْلِحُ
गढ़ ले	अल्लाह पर	झूठ	या	वो झुठलाए	उसकी आयात को	बेशक वो	नहीं वो फ़लाह पाते

الْمُجْرِمُوْنَ ⑰	وَيَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مَا	لَا يَضُرُّهُمْ	وَلَا	
जो मुजरिम हैं	और वो इबादत करते हैं	सिवाए	अल्लाह के	उसकी जो	नहीं वो नुक़्सान देता उन्हें	और ना	

يَنْفَعُهُمْ	وَيَقُوْلُوْنَ	هٰٓؤُلَآءِ	شُفَعَآؤُنَا	عِنْدَ اللّٰهِ ؕ	قُلْ	اَتُنَبِّـُٔوْنَ
वो नफ़ा देता है उन्हें	और वो कहते हैं	ये हैं	सिफ़ारशी हमारे	अल्लाह के यहां	कह दीजिए	क्या तुम ख़बर देते हो

اللّٰهَ	بِمَا	لَا يَعْلَمُ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَلَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	سُبْحٰنَهٗ	وَتَعٰلٰى
अल्लाह को	उसकी जो	नहीं वो जानता	आसमानों में	और ना	ज़मीन में	पाक है वो	और वो बुलंदतर है

عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ ⑱	وَمَا	كَانَ	النَّاسُ	اِلَّآ	اُمَّةً	وَّاحِدَةً
उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं	और ना	थे	लोग	मगर	उम्मत	एक ही

فَاخْتَلَفُوْا ؕ	وَلَوْلَا	كَلِمَةٌ	سَبَقَتْ	مِنْ رَّبِّكَ	لَقُضِيَ
फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	और अगर ना होती	एक बात	जो तैय हो चुकी	आपके रब की तरफ़ से	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता

بَيْنَهُمْ	فِيْمَا	فِيْهِ	يَخْتَلِفُوْنَ ⑲	وَيَقُوْلُوْنَ	لَوْلَآ	اُنْزِلَ
दर्मियान उनके	उस मामले में	जिसमें	वो इख़्तिलाफ़ कर रहे थे	और वो कहते हैं	क्यों ना	उतारी गई

عَلَيْهِ	اٰيَةٌ	مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ	فَقُلْ	اِنَّمَا	الْغَيْبُ	لِلّٰهِ	فَانْتَظِرُوْا ۚ
उस पर	कोई निशानी	उसके रब की तरफ़ से	तो कह दीजिए	बेशक	ग़ैब	अल्लाह ही के लिए है	पस तुम इंतिज़ार करो

ع 2 10 7

اِنِّیْ	مَعَكُمْ	مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ﴿20﴾ ع	وَاِذَآ	اَذَقْنَا	النَّاسَ	رَحْمَةً
बेशक मैं	तुम्हारे साथ	इन्तिज़ार करने वालों में से हूं	और जब	मज़ा चखाते हैं हम	लोगों को	रहमत का

مِّنْۢ بَعْدِ	ضَرَّآءَ	مَسَّتْهُمْ	اِذَا	لَهُمْ	مَّكْرٌ	فِیْۤ اٰیَاتِنَا ؕ	قُلِ
बाद	मुसीबत के	जो पहुंची उन्हें	तब	उनके लिए	चालें चलना है	हमारी आयात में	कह दीजिए

اللّٰهُ	اَسْرَعُ	مَكْرًا ؕ	اِنَّ	رُسُلَنَا	یَكْتُبُوْنَ	مَا	تَمْكُرُوْنَ ﴿21﴾
अल्लाह	ज़्यादा तेज़ है	चाल चलने में	बेशक	फ़रिश्ते हमारे	लिख रहे हैं	जो	तुम चालें चल रहे हो

هُوَ	الَّذِیْ	یُسَیِّرُكُمْ	فِی الْبَرِّ	وَالْبَحْرِ ؕ	حَتّٰۤی	اِذَا	كُنْتُمْ
वो ही है	जो	चलाता है तुम्हें	ख़ुश्की में	और समुन्दर में	यहाँ तक कि	जब	होते हो तुम

فِی الْفُلْكِ ۚ	وَجَرَیْنَ	بِهِمْ	بِرِیْحٍ	طَیِّبَةٍ	وَّفَرِحُوْا	بِهَا
कश्तियों में	और वो ले चलती हैं	उन्हें	साथ हवा	उम्दा के	और वो ख़ुश होते हैं	साथ उसके

جَآءَتْهَا	رِیْحٌ	عَاصِفٌ	وَّجَآءَهُمُ	الْمَوْجُ	مِنْ كُلِّ مَكَانٍ
आ जाती है उन(कश्तियों) पर	हवा	शदीद	और आ जाती है उन पर	मौज	हर तरफ़ से

وَّظَنُّوْۤا	اَنَّهُمْ	اُحِیْطَ	بِهِمْ ۙ	دَعَوُا	اللّٰهَ	مُخْلِصِیْنَ	لَهُ
और वो समझते हैं	कि बेशक वो	घेर लिया गया है	उन्हें	वो पुकारते हैं	अल्लाह को	ख़ालिस करने वाले होकर	उसके लिए

الدِّیْنَ ۚ	لَئِنْ	اَنْجَیْتَنَا	مِنْ هٰذِهٖ	لَنَكُوْنَنَّ	مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿22﴾
दीन को	अलबत्ता अगर	निजात दी तूने हमें	इस से	अलबत्ता हम ज़रूर हो जाऐंगे	शुक्र गुज़ारों में से

فَلَمَّاۤ	اَنْجٰىهُمْ	اِذَا	هُمْ	یَبْغُوْنَ	فِی الْاَرْضِ	بِغَیْرِ	الْحَقِّ ؕ
फिर जब	वो निजात दे देता है उन्हें	तब	वो	वो बग़ावत करने लगते हैं	ज़मीन में	बग़ैर	हक़ के

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ	اِنَّمَا	بَغْیُكُمْ	عَلٰۤی اَنْفُسِكُمْ ۙ	مَّتَاعَ	الْحَیٰوةِ
ऐ लोगो	बेशक	बग़ावत तुम्हारी	तुम्हारे अपने ख़िलाफ़ है	फ़ायदा उठाना है	ज़िंदगी का

الدُّنْيَا ۖ	ثُمَّ	اِلَيْنَا	مَرْجِعُكُمْ	فَنُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ
दुनिया की	फिर	हमारी ही तरफ़	लौटना है तुम्हारा	फिर हम बताऐंगे तुम्हें	वो जो	थे तुम

تَعْمَلُوْنَ ﴿23﴾	اِنَّمَا	مَثَلُ	الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا	كَمَآءٍ	اَنْزَلْنٰهُ
तुम अमल करते रहे	बेशक	मिसाल	दुनिया की ज़िंदगी की	पानी की तरह है	उतारा हमने उसे

مِنَ السَّمَآءِ	فَاخْتَلَطَ	بِهٖ	نَبَاتُ	الْاَرْضِ	مِمَّا	يَاْكُلُ
आसमान से	फिर मिल-जुल गई	साथ इसके	नबातात	ज़मीन की	उसमें से जो	खाते हैं

النَّاسُ	وَالْاَنْعَامُ ؕ	حَتّٰٓى	اِذَآ	اَخَذَتِ	الْاَرْضُ	زُخْرُفَهَا
लोग	और जानवर (मवेशी)	यहां तक कि	जब	पकड़ लिया	ज़मीन ने	अपनी रौनक़ को

وَازَّيَّنَتْ	وَظَنَّ	اَهْلُهَآ	اَنَّهُمْ	قٰدِرُوْنَ	عَلَيْهَآ ۙ	اَتٰىهَآ
और वो मुज़य्यन हो गई	और समझ लिया	उसके रहने वालों ने	बेशक वो	क़ादिर हैं	उस पर	आ गया उस पर

اَمْرُنَا	لَيْلًا	اَوْ	نَهَارًا	فَجَعَلْنٰهَا	حَصِيْدًا	كَاَنْ	لَّمْ	تَغْنَ
हुक्म हमारा	रात को	या	दिन को	तो कर दिया हमने उसे	कटी हुई खेती	गोया कि	नहीं	वो बसी थी

بِالْاَمْسِ ؕ	كَذٰلِكَ	نُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿24﴾
कल	इसी तरह	हम खोल कर बयान करते हैं	आयात	उन लोगों के लिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं

وَاللّٰهُ	يَدْعُوْٓا	اِلٰى	دَارِ السَّلٰمِ ؕ	وَيَهْدِيْ	مَنْ	يَّشَآءُ
और अल्लाह	वो बुला रहा है	तरफ़	सलामती वाले घर के	और वो हिदायत देता है	जिसे	वो चाहता है

اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿25﴾	لِلَّذِيْنَ	اَحْسَنُوا	الْحُسْنٰى	وَزِيَادَةٌ ؕ
तरफ़ रास्ते	सीधे के	उनके लिए जिन्होंने	अच्छा किया	अच्छाई है	और ज़्यादा भी

وَلَا	يَرْهَقُ	وُجُوْهَهُمْ	قَتَرٌ	وَّلَا	ذِلَّةٌ ؕ	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ
और ना	छाएगी	उनके चेहरों पर	स्याही	और ना	ज़िल्लत	यही लोग हैं	साथी

الْجَنَّةِ ۚ	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ﴿26﴾	وَالَّذِيْنَ	كَسَبُوا	السَّيِّاٰتِ	جَزَآءُ
जन्नत के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और वो जिन्होंने	कमाईं	बुराईयां	(तो) बदला

سَيِّئَةٍ	بِمِثْلِهَا ۙ	وَتَرْهَقُهُمْ	ذِلَّةٌ ؕ	مَا	لَهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ
बुराई का	उसी की मानिंद है	और छा जाएगी उन पर	ज़िल्लत	नहीं है	उनके लिए	अल्लाह से

مِنْ عَاصِمٍ ۚ	كَاَنَّمَآ	اُغْشِيَتْ	وُجُوْهُهُمْ	قِطَعًا	مِّنَ الَّيْلِ
कोई बचाने वाला	गोया कि	ढांप दिए गऐ हैं	चेहरे उनके	टुकड़ों से	रात के

مُظْلِمًا ؕ	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	النَّارِ ۚ	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ﴿27﴾	وَيَوْمَ
तारीक	यही लोग हैं	साथी	आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और जिस दिन

نَحْشُرُهُمْ	جَمِيْعًا	ثُمَّ	نَقُوْلُ	لِلَّذِيْنَ	اَشْرَكُوْا	مَكَانَكُمْ
हम इकट्ठा करेंगे उनको	सब के सब को	फिर	हम कहेंगे	उनको जिन्होंने	शिर्क किया	(ठहरो) अपनी जगह

اَنْتُمْ	وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ	فَزَيَّلْنَا	بَيْنَهُمْ	وَقَالَ	شُرَكَآؤُهُمْ
तुम	और शरीक तुम्हारे	तो जुदाई डाल देंगे हम	दर्मियान उनके	और कहेंगे	शरीक उनके

مَّا	كُنْتُمْ	اِيَّانَا	تَعْبُدُوْنَ ﴿28﴾	فَكَفٰى	بِاللّٰهِ	شَهِيْدًا
ना	थे तुम	सिर्फ़ हमारी ही	तुम इबादत करते	पस काफ़ी है	अल्लाह	गवाह

وَبَيْنَكُمْ	اِنْ	كُنَّا	عَنْ عِبَادَتِكُمْ	لَغٰفِلِيْنَ ﴿29﴾	هُنَالِكَ	تَبْلُوْا
और दर्मियान तुम्हारे	बेशक	थे हम	तुम्हारी इबादत से	अलबत्ता ग़ाफ़िल	उसी जगह/वक़्त	जांच लेगा

كُلُّ	نَفْسٍ	مَّآ	اَسْلَفَتْ	وَرُدُّوْٓا	اِلَى اللّٰهِ	مَوْلٰىهُمُ	الْحَقِّ
हर	नफ़्स	जो	उसने पहले किया	और वो लौटाए जाऐंगे	तरफ़ अल्लाह के	जो मौला है उनका	सच्चा

وَضَلَّ	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَفْتَرُوْنَ ﴿30﴾ ع	قُلْ	مَنْ	يَّرْزُقُكُمْ
और गुम हो जाएगा	उनसे	जो	थे वो	वो गढ़ते	कह दीजिए	कौन	रिज़्क़ देता है तुम्हें

ع 3 10 8 النصف

مِّنَ السَّمَآءِ	وَالْاَرْضِ	اَمَّنْ	يَّمْلِكُ	السَّمْعَ	وَالْاَبْصَارَ	وَمَنْ
आसमान से	और ज़मीन से	या कौन	मालिक हो सकता है	कानों	और आंखों का	और कौन

يُّخْرِجُ	الْحَيَّ	مِنَ الْمَيِّتِ	وَيُخْرِجُ	الْمَيِّتَ	مِنَ الْحَيِّ	وَمَنْ
निकालता है	ज़िंदा को	मुर्दा से	और निकालता है	मुर्दा को	ज़िंदा से	और कौन

يُّدَبِّرُ	الْاَمْرَ ؕ	فَسَيَقُوْلُوْنَ	اللّٰهُ ۚ	فَقُلْ	اَفَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿31﴾
तदबीर करता है	काम की	तो वो ज़रूर कहेंगे	अल्लाह	तो कह दीजिए	क्या भला नहीं	तुम डरते

فَذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	رَبُّكُمُ	الْحَقُّ ۚ	فَمَاذَا	بَعْدَ	الْحَقِّ	اِلَّا	الضَّلٰلُ ۚۖ
पस ये है	अल्लाह	रब तुम्हारा	सच्चा	तो क्या कुछ है	बाद	हक़ के	सिवाए	गुमराही के

فَاَنّٰى	تُصْرَفُوْنَ ﴿32﴾	كَذٰلِكَ	حَقَّتْ	كَلِمَتُ	رَبِّكَ	عَلَى الَّذِيْنَ
तो कहां/किधर	तुम फेरे जाते हो	इसी तरह	हक़ हो गई	बात	आपके रब की	उन पर जिन्होंने

فَسَقُوْا	اَنَّهُمْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿33﴾	قُلْ	هَلْ	مِنْ شُرَكَآئِكُمْ	مَّنْ
नाफ़रमानी की	बेशक वो	नहीं वो ईमान लाऐंगे	कह दीजिए	क्या है	तुम्हारे शरीकों में से कोई	जो

يَّبْدَؤُا	الْخَلْقَ	ثُمَّ	يُعِيْدُهٗ ؕ	قُلِ	اللّٰهُ	يَبْدَؤُا	الْخَلْقَ
इब्तिदा करता है	तख़लीक़ की	फिर	वो लौटाता हो उसे	कह दीजिए	अल्लाह	वो इब्तिदा करता है	तख़लीक़ की

ثُمَّ	يُعِيْدُهٗ	فَاَنّٰى	تُؤْفَكُوْنَ ﴿34﴾	قُلْ	هَلْ	مِنْ شُرَكَآئِكُمْ	
फिर	वो ही लौटाएगा उसे	तो कहां/किधर	तुम फेरे जाते हो	कह दीजिए	क्या है	तुम्हारे शरीकों में से कोई	

مَّنْ	يَّهْدِيْٓ	اِلَى الْحَقِّ ؕ	قُلِ	اللّٰهُ	يَهْدِيْ	لِلْحَقِّ ؕ	اَفَمَنْ
जो	रहनुमाई करता हो	तरफ़ हक़ के	कह दीजिए	अल्लाह	वो रहनुमाई करता है	तरफ़ हक़ के	क्या भला जो

يَّهِدِّيْٓ	اِلَى الْحَقِّ	اَحَقُّ	اَنْ	يُّتَّبَعَ	اَمَّنْ	لَّا يَهِدِّيْٓ	اِلَّآ
रहनुमाई करता है	तरफ़ हक़ के	ज़्यादा हक़दार है	कि	वो पैरवी किया जाए	या जो	नहीं वो राह पाता	मगर

اَنْ	يُّهْدٰٓى ج	فَمَا	لَكُمْ قف	كَيْفَ	تَحْكُمُوْنَ ﴿35﴾	وَمَا	يَتَّبِعُ
ये कि	वो रहनुमाई किया जाए	तो क्या है	तुम्हें	कैसे	तुम फ़ैसले करते हो	और नहीं	पैरवी करते

اَكْثَرُهُمْ	اِلَّا	ظَنًّا ط	اِنَّ	الظَّنَّ	لَا يُغْنِيْ	مِنَ الْحَقِّ	شَيْـًٔا ط
अक्सर उनके	मगर	गुमान की	बेशक	गुमान	नहीं काम आता	हक़ के मुक़ाबले में	कुछ भी

اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌۢ	بِمَا	يَفْعَلُوْنَ ﴿36﴾	وَمَا	كَانَ	هٰذَا	الْقُرْاٰنُ
बेशक	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	उसे जो	वो कर रहे हैं	और नहीं	है	ये	क़ुरआन

اَنْ	يُّفْتَرٰى	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَلٰكِنْ	تَصْدِيْقَ	الَّذِيْ	بَيْنَ يَدَيْهِ
कि	वो गढ़ लिया जाए	सिवाय	अल्लाह के	और लेकिन	तसदीक़ है	उस चीज़ की जो	इससे पहले है

وَتَفْصِيْلَ	الْكِتٰبِ	لَا رَيْبَ	فِيْهِ	مِنْ رَّبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿37﴾ قف	اَمْ
और तफ़सील है	किताब की	नहीं कोई शक	इसमें	रब की तरफ़ से है	तमाम जहानों के	या

يَقُوْلُوْنَ	افْتَرٰىهُ ط	قُلْ	فَاْتُوْا	بِسُوْرَةٍ	مِّثْلِهٖ	وَادْعُوْا	مَنِ
वो कहते हैं	इसने गढ़ लिया है उसे	कह दीजिए	पस ले आओ	एक सूरत	इस जैसी	और बुला लो	जिन्हें

اسْتَطَعْتُمْ	مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿38﴾	بَلْ	كَذَّبُوْا
इस्तिताअत रखते हो तुम	सिवाय	अल्लाह के	अगर	हो तुम	सच्चे	बल्कि	उन्होंने झुठलाया

بِمَا	لَمْ	يُحِيْطُوْا	بِعِلْمِهٖ	وَلَمَّا	يَاْتِهِمْ	تَاْوِيْلُهٗ ط
उसे जो	नहीं	उन्होंने अहाता किया	जिसके इल्म का	हालांकि नहीं	आई उनके पास	तावील/हक़ीक़त उसकी

كَذٰلِكَ	كَذَّبَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	فَانْظُرْ	كَيْفَ	كَانَ
इसी तरह	झुठलाया	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	तो देखो	किस तरह	हुआ

عَاقِبَةُ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿39﴾	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يُّؤْمِنُ	بِهٖ	وَمِنْهُمْ
अंजाम	ज़ालिमों का	और इनमें से कोई है	जो	ईमान लाता है	इस पर	और इनमें से कोई है

ع 4 10 9

مَّنْ	لَّا يُؤْمِنُ	بِهٖ ؕ	وَ رَبُّكَ	اَعْلَمُ	بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿40﴾ ع	وَ اِنْ
जो	नहीं वो ईमान लाता	इस पर	और रब आपका	ख़ूब जानता है	फ़साद करने वालों को	और अगर

كَذَّبُوْكَ	فَقُلْ	لِّيْ	عَمَلِيْ	وَ لَكُمْ	عَمَلُكُمْ ۚ	اَنْتُمْ
वो झुठलाऐं आपको	तो कह दीजिए	मेरे लिए है	अमल मेरा	और तुम्हारे लिए है	अमल तुम्हारा	तुम

بَرِيْٓـُٔوْنَ	مِمَّآ	اَعْمَلُ	وَ اَنَا	بَرِيْٓءٌ	مِّمَّا	تَعْمَلُوْنَ ﴿41﴾	وَ مِنْهُمْ
बरीउज़्ज़िम्मा हो	उससे जो	मैं अमल करता हूं	और मैं	बरीउज़्ज़िम्मा हूं	उससे जो	तुम अमल करते हो	और कुछ उनमें से हैं

مَّنْ	يَّسْتَمِعُوْنَ	اِلَيْكَ ؕ	اَفَاَنْتَ	تُسْمِعُ	الصُّمَّ	وَ لَوْ
जो	कान लगाते हैं	तरफ़ आपके	क्या फिर आप	सुनाऐंगे	बहरों को	और अगरचे

كَانُوْا	لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿42﴾	وَ مِنْهُمْ	مَّنْ	يَّنْظُرُ	اِلَيْكَ ؕ	اَفَاَنْتَ
हों वो	ना वो अक़्ल रखते	और उनमें से कोई है	जो	देखता है	तरफ़ आपके	क्या फिर आप

تَهْدِى	الْعُمْىَ	وَ لَوْ	كَانُوْا	لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿43﴾	اِنَّ	اللّٰهَ
राह दिखाऐंगे	अंधों को	और अगरचे	हों वो	ना वो देखते	बेशक	अल्लाह

لَا يَظْلِمُ	النَّاسَ	شَيْـًٔا	وَّلٰكِنَّ	النَّاسَ	اَنْفُسَهُمْ	يَظْلِمُوْنَ ﴿44﴾
नहीं ज़ुल्म करता	लोगों पर	कुछ भी	और लेकिन	लोग	अपनी ही जानों पर	वो ज़ुल्म करते हैं

وَ يَوْمَ	يَحْشُرُهُمْ	كَاَنْ	لَّمْ	يَلْبَثُوْٓا	اِلَّا	سَاعَةً	مِّنَ النَّهَارِ
और जिस दिन	वो इकट्ठा करेगा उन्हें	गोया कि	नहीं	वो ठहरे	मगर	एक घड़ी	दिन की

يَتَعَارَفُوْنَ	بَيْنَهُمْ ؕ	قَدْ	خَسِرَ	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِلِقَآءِ
वो एक दूसरे को पहचानते रहे	आपस में	तहक़ीक़	ख़सारा पाया	जिन्होंने	झुठलाया	मुलाक़ात को

اللّٰهِ	وَ مَا	كَانُوْا	مُهْتَدِيْنَ ﴿45﴾	وَ اِمَّا	نُرِيَنَّكَ	بَعْضَ	الَّذِىْ
अल्लाह की	और ना	थे वो	हिदायत पाने वाले	और अगर	हम दिखाऐं आपको	बाज़	वो चीज़ जो

نَعِدْهُمْ	اَوْ	نَتَوَفَّيَنَّكَ	فَاِلَيْنَا	مَرْجِعُهُمْ	ثُمَّ	اللّٰهُ	شَهِيْدٌ
हम वादा करते हैं उनसे	या	हम फ़ौत कर दें आपको	तो तरफ़ हमारे ही	लौटना है उनका	फिर	अल्लाह	ख़ूब गवाह है

عَلٰى	مَا	يَفْعَلُوْنَ ﴿46﴾	وَلِكُلِّ	اُمَّةٍ	رَّسُوْلٌ ۚ	فَاِذَا	جَآءَ
इस पर	जो	वो करते हैं	और वास्ते हर	उम्मत के	एक रसूल है	फिर जब	आ जाता है

رَسُوْلُهُمْ	قُضِيَ	بَيْنَهُمْ	بِالْقِسْطِ	وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿47﴾
रसूल उनका	फ़ैसला कर दिया जाता है	दर्मियान उनके	साथ इंसाफ़ के	और वो	नहीं वो ज़ुल्म किए जाते

وَيَقُوْلُوْنَ	مَتٰى	هٰذَا الْوَعْدُ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿48﴾	قُلْ
और वो कहते हैं	कब होगा	ये वादा	अगर	हो तुम	सच्चे	कह दीजिए

لَآ اَمْلِكُ	لِنَفْسِيْ	ضَرًّا	وَّلَا	نَفْعًا	اِلَّا	مَا	شَآءَ	اللّٰهُ ؕ
नहीं मैं मालिक	अपनी जान के लिए	किसी नुक़सान का	और ना	किसी नफ़ा का	मगर	जो	चाहे	अल्लाह

لِكُلِّ	اُمَّةٍ	اَجَلٌ ؕ	اِذَا	جَآءَ	اَجَلُهُمْ	فَلَا	يَسْتَاْخِرُوْنَ
वास्ते हर	उम्मत के	एक मुक़र्रर मुद्दत है	जब	आ जाएगी	मुक़र्रर मुद्दत उनकी	तो नहीं	वो पीछे रह सकेंगे

سَاعَةً	وَّلَا	يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿49﴾	قُلْ	اَرَءَيْتُمْ	اِنْ	اَتٰىكُمْ
एक घड़ी	और ना	वो आगे बढ़ सकेंगे	कह दीजिए	क्या ग़ौर किया तुमने	अगर	आ जाए तुम्हारे पास

عَذَابُهٗ	بَيَاتًا	اَوْ	نَهَارًا	مَّاذَا	يَسْتَعْجِلُ	مِنْهُ	الْمُجْرِمُوْنَ ﴿50﴾
अज़ाब उसका	रात को	या	दिन को	क्या है	(जो) वो जल्दी तलब कर रहे हैं	उसमें से	मुजरिम

اَثُمَّ	اِذَا مَا	وَقَعَ	اٰمَنْتُمْ	بِهٖ ؕ	آٰلْـٰٔنَ	وَقَدْ	كُنْتُمْ
क्या फिर	जुंही	वो वाक़अ होगा	(तब) ईमान लाओगे तुम	उस पर	क्या अब	हालांकि तहक़ीक़	थे तुम

بِهٖ	تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿51﴾	ثُمَّ	قِيْلَ	لِلَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	ذُوْقُوْا	عَذَابَ
उसी को	तुम जल्दी तलब किया करते	फिर	कहा जाएगा	उनको जिन्होंने	ज़ुल्म किया	चखो	अज़ाब

تَكْسِبُوْنَ (52)	كُنْتُمْ	بِمَا	اِلَّا	تُجْزَوْنَ	هَلْ	الْخُلْدِ ج
तुम कमाई करते	थे तुम	उसका जो	मगर	तुम बदला दिए जा रहे	नहीं	हमेशगी का

وقف النبي عليه السلام
وقف النبي عليه السلام

لَحَقٌّ ج	اِنَّهٗ	وَرَبِّيْٓ	اِيْ	قُلْ	هُوَ ط	اَحَقٌّ	وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ
यक़ीनन हक़ है	बेशक वो	क़सम है मेरे रब की	हां	कह दीजिए	वो	क्या सच है	और वो पूछते हैं आपसे

ع 5 13 10

ظَلَمَتْ	لِكُلِّ نَفْسٍ	اَنَّ	وَلَوْ	بِمُعْجِزِيْنَ (53) ع	اَنْتُمْ	وَمَآ
जिसने ज़ुल्म किया	हर नफ़्स के लिए	बेशक हो	और अगर	आजिज़ करने वाले	तुम	और नहीं

رَاَوُا	لَمَّا	النَّدَامَةَ	وَاَسَرُّوا	بِهٖ ط	لَافْتَدَتْ	فِي الْاَرْضِ	مَا
वो देखेंगे	जब	नदामत को	और वो छुपाएंगे	उसका	अलबत्ता वो फ़िदया दे दे	ज़मीन में है	जो कुछ

اَلَآ	لَا يُظْلَمُوْنَ (54)	وَهُمْ	بِالْقِسْطِ	بَيْنَهُمْ	وَقُضِيَ	الْعَذَابَ ج
ख़बरदार	ना वो ज़ुल्म किए जाएंगे	और वो	साथ इंसाफ़ के	दर्मियान उनके	और फ़ैसला कर दिया जाएगा	अज़ाब

اللّٰهِ	وَعْدَ	اِنَّ	اَلَآ	وَالْاَرْضِ ط	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا	لِلّٰهِ	اِنَّ
अल्लाह का	वादा	बेशक	ख़बरदार	और ज़मीन में है	आसमानों में	जो कुछ	अल्लाह ही के लिए है	बेशक

وَاِلَيْهِ	وَيُمِيْتُ	يُحْيٖ	هُوَ	لَا يَعْلَمُوْنَ (55)	اَكْثَرَهُمْ	وَّلٰكِنَّ	حَقٌّ
और तरफ़ उसी के	और वो मौत देता है	वो ज़िंदा करता है	वो ही	नहीं वो इल्म रखते	अक्सर उनके	और लेकिन	सच्चा है

مِّنْ رَّبِّكُمْ	مَّوْعِظَةٌ	جَآءَتْكُمْ	قَدْ	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ	تُرْجَعُوْنَ (56)
तुम्हारे रब की तरफ़ से	एक नसीहत	आ चुकी तुम्हारे पास	तहक़ीक़	ऐ लोगो	तुम लौटाए जाओगे

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (57)	وَّرَحْمَةٌ	وَهُدًى	فِي الصُّدُوْرِ ۙ	لِّمَا	وَشِفَآءٌ
ईमान लाने वालों के लिए	और रहमत	और हिदायत	सीनों में है	उसके लिए जो	और शिफ़ा

خَيْرٌ	هُوَ	فَلْيَفْرَحُوْا ط	فَبِذٰلِكَ	وَبِرَحْمَتِهٖ	بِفَضْلِ اللّٰهِ	قُلْ
बेहतर है	वो	पस ज़रूर वो ख़ुश हों	तो इस पर	और उसकी रहमत के	साथ अल्लाह के फ़ज़्ल के	कह दीजिए

مِّمَّا	يَجْمَعُوْنَ ﴿58﴾	قُلْ	اَرَءَيْتُمْ	مَّآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	لَكُمْ
उससे जो	वो जमा करते हैं	कह दीजिए	क्या ग़ौर किया तुमने	जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	तुम्हारे लिए

مِّنْ رِّزْقٍ	فَجَعَلْتُمْ	مِّنْهُ	حَرَامًا	وَّحَلٰلًا ؕ	قُلْ	آٰللّٰهُ	اَذِنَ
रिज़्क़ में से	तो बना लिया तुमने	उसमें से	कुछ हराम	और कुछ हलाल	कह दीजिए	क्या अल्लाह ने	इजाज़त दी है

لَكُمْ	اَمْ	عَلَى اللّٰهِ	تَفْتَرُوْنَ ﴿59﴾	وَمَا	ظَنُّ	الَّذِيْنَ	يَفْتَرُوْنَ
तुम्हें	या	अल्लाह पर	तुम झूठ गढ़ते हो	और क्या है	गुमान	उनका जो	गढ़ते हैं

عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ	يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَذُوْ فَضْلٍ	عَلَى النَّاسِ	
अल्लाह पर	झूठ	क़यामत के दिन में	बेशक	अल्लाह	अलबत्ता फ़ज़्ल वाला है	लोगों पर	

ع 6 7 11

وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿60﴾ ع	وَمَا	تَكُوْنُ	فِيْ شَاْنٍ	وَّمَا	
और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो शुक्र करते	और नहीं	आप होते	किसी हाल में	और नहीं	

تَتْلُوْا	مِنْهُ	مِنْ قُرْاٰنٍ	وَّلَا	تَعْمَلُوْنَ	مِنْ عَمَلٍ	اِلَّا	كُنَّا
आप पढ़ते	उस (की तरफ़) से	कुछ क़ुरआन	और नहीं	तुम अमल करते हो	कोई अमल	मगर	होते हैं हम

عَلَيْكُمْ	شُهُوْدًا	اِذْ	تُفِيْضُوْنَ	فِيْهِ ؕ	وَمَا	يَعْزُبُ	عَنْ رَّبِّكَ
तुम पर	शाहिद/गवाह	जब	तुम मशग़ूल होते हो	उसमें	और नहीं	छुपता	आपके रब से

مِنْ مِّثْقَالِ	ذَرَّةٍ	فِي الْاَرْضِ	وَلَا	فِي السَّمَآءِ	وَلَآ	اَصْغَرَ	
हम वज़न	ज़र्रे के	ज़मीन में	और ना	आसमान में	और ना	छोटा	

مِنْ ذٰلِكَ	وَلَآ	اَكْبَرَ	اِلَّا	فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿61﴾	اَلَآ	اِنَّ	اَوْلِيَآءَ
इससे	और ना	बड़ा	मगर	एक खुली किताब में है	ख़बरदार	बेशक	दोस्त

اللّٰهِ	لَا خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿62﴾ ۚ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
अल्लाह के	ना कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	वो जो	ईमान लाए

وَ كَانُوْا	يَتَّقُوْنَ ﴿63﴾ ط	لَهُمُ	الْبُشْرٰى	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا
और हैं वो	वो तक़वा करते	उन्हीं के लिए	ख़ुशख़बरी है	ज़िंदगी में	दुनिया की

وَ فِي الْاٰخِرَةِ ط	لَا تَبْدِيْلَ	لِكَلِمٰتِ	اللّٰهِ ط	ذٰلِكَ	هُوَ	الْفَوْزُ
और आख़िरत में	नहीं तबदील होना	कलिमात को	अल्लाह के	ये है	वो ही	कामयाबी

الْعَظِيْمُ ﴿64﴾ ط	وَ لَا	يَحْزُنْكَ	قَوْلُهُمْ ۘ	اِنَّ	الْعِزَّةَ	لِلّٰهِ
बहुत बड़ी	और ना	ग़मगीन करे आपको	बात उनकी	बेशक	इज़्ज़त	अल्लाह ही के लिए है

وقف لازم

جَمِيْعًا ط	هُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿65﴾	اَلَآ	اِنَّ	لِلّٰهِ	مَنْ
सारी की सारी	वो	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	ख़बरदार	बेशक	अल्लाह ही के लिए है	जो कोई

فِي السَّمٰوٰتِ	وَ مَنْ	فِي الْاَرْضِ ط	وَ مَا	يَتَّبِعُ	الَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ
आसमानों में है	और जो कोई	ज़मीन में है	और किस की	पैरवी करते हैं	वो लोग जो	पुकारते हैं

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	شُرَكَآءَ ط	اِنْ	يَّتَّبِعُوْنَ	اِلَّا	الظَّنَّ	وَ اِنْ	هُمْ
सिवाए	अल्लाह के	शरीकों को	नहीं	वो पैरवी करते	मगर	गुमान की	और नहीं	वो

اِلَّا	يَخْرُصُوْنَ ﴿66﴾	هُوَ	الَّذِيْ	جَعَلَ	لَكُمُ	الَّيْلَ	لِتَسْكُنُوْا
मगर	वो क़यास आराइयां करते हैं	वो ही है	जिसने	बनाया	तुम्हारे लिए	रात को	ताकि तुम सुकून हासिल करो

فِيْهِ	وَ النَّهَارَ	مُبْصِرًا ط	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ
उसमें	और दिन को	रौशन/दिखाने वाला	बेशक	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए

يَّسْمَعُوْنَ ﴿67﴾	قَالُوا	اتَّخَذَ	اللّٰهُ	وَلَدًا	سُبْحٰنَهٗ ط	هُوَ	الْغَنِيُّ ط
जो सुनते हैं	उन्होंने कहा	बना ली	अल्लाह ने	औलाद	पाक है वो	वो	बहुत बेनियाज़ है

لَهٗ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَ مَا	فِي الْاَرْضِ ط	اِنْ	عِنْدَكُمْ
उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	नहीं	तुम्हारे पास

مِّنْ سُلْطٰنٍۭ	بِهٰذَا ؕ	اَتَقُوْلُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿68﴾	قُلْ
कोई दलील	इसकी	क्या तुम कहते हो	अल्लाह पर	जो	नहीं तुम जानते	कह दीजिए

اِنَّ	الَّذِيْنَ	يَفْتَرُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ	لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿69﴾ ؕ	مَتَاعٌ
बेशक	वो लोग जो	गढ़ते हैं	अल्लाह पर	झूठ	नहीं वो फ़लाह पाऐंगे	फ़ायदा उठाना है

فِى الدُّنْيَا	ثُمَّ	اِلَيْنَا	مَرْجِعُهُمْ	ثُمَّ	نُذِيْقُهُمُ	الْعَذَابَ	الشَّدِيْدَ
दुनिया में	फिर	तरफ़ हमारे ही	लौटना है उनका	फिर	हम चखाऐंगे उन्हें	अज़ाब	सख़्त/शदीद

ع 7 10 12 الثالثة وقف لازم

بِمَا	كَانُوْا	يَكْفُرُوْنَ ﴿70﴾ ع	وَاتْلُ	عَلَيْهِمْ	نَبَاَ	نُوْحٍ ۘ	اِذْ	قَالَ
बवजह इसके जो	थे वो	वो कुफ़्र करते	और पढ़िए	उन पर	ख़बर	नूह की	जब	उसने कहा

لِقَوْمِهٖ	يٰقَوْمِ	اِنْ	كَانَ	كَبُرَ	عَلَيْكُمْ	مَّقَامِىْ	وَتَذْكِيْرِىْ
अपनी क़ौम से	ऐ मेरी क़ौम	अगर	है	भारी	तुम पर	खड़ा होना मेरा	और नसीहत करना मेरा

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	فَعَلَى اللّٰهِ	تَوَكَّلْتُ	فَاَجْمِعُوْٓا	اَمْرَكُمْ	وَشُرَكَآءَكُمْ
साथ अल्लाह की आयात के	तो अल्लाह ही पर	तवक्कल किया मैंने	तो पुख़्ता कर लो तुम	मामला अपना	और शरीक तुम्हारे(भी)

ثُمَّ	لَا يَكُنْ	اَمْرُكُمْ	عَلَيْكُمْ	غُمَّةً	ثُمَّ	اقْضُوْٓا	اِلَىَّ
फिर	ना हो	मामला तुम्हारा	तुम पर	पोशीदा/मख़्फ़ी	फिर	फ़ैसला कर लो	साथ मेरे

وَلَا	تُنْظِرُوْنِ ﴿71﴾	فَاِنْ	تَوَلَّيْتُمْ	فَمَا	سَاَلْتُكُمْ	مِّنْ اَجْرٍ ؕ	اِنْ
और ना	तुम मोहलत दो मुझे	फिर अगर	मुंह फेर लो तुम	तो नहीं	मांगा मैंने तुमसे	कोई अजर	नहीं

اَجْرِىَ	اِلَّا	عَلَى اللّٰهِ ۙ	وَاُمِرْتُ	اَنْ	اَكُوْنَ	مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿72﴾
अजर मेरा	मगर	अल्लाह पर	और मैं हुक्म दिया गया हूं	कि	मैं हो जाऊं	फ़रमांबरदारों में से

فَكَذَّبُوْهُ	فَنَجَّيْنٰهُ	وَمَنْ	مَّعَهٗ	فِى الْفُلْكِ	وَجَعَلْنٰهُمْ
तो उन्होंने झुठला दिया उसे	पस निजात दी हमने उसे	और उनको जो	उसके साथ थे	कश्ती में	और बनाया हमने उन्हें

خَلٰٓئِفَ	وَ اَغْرَقْنَا	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا ۚ	فَانْظُرْ	كَيْفَ	كَانَ
जानशीन	और ग़र्क़ कर दिया हमने	उनको जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को	तो देखो	कैसा	हुआ

عَاقِبَةُ	الْمُنْذَرِيْنَ ﴿73﴾	ثُمَّ	بَعَثْنَا	مِنْۢ بَعْدِهٖ	رُسُلًا	اِلٰى قَوْمِهِمْ	
अंजाम	डराए जाने वालों का	फिर	भेजे हमने	बाद इसके	कई रसूल	तरफ़ उनकी क़ौम के	

فَجَآءُوْهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ	فَمَا	كَانُوْا	لِيُؤْمِنُوْا	بِمَا	كَذَّبُوْا	بِهٖ
तो वो आऐ उनके पास	साथ वाज़ेह दलाइल के	तो ना	थे वो	कि वो ईमान लाते	बवजह इसके जो	वो झुठला चुके थे	उसे

مِنْ قَبْلُ ؕ	كَذٰلِكَ	نَطْبَعُ	عَلٰى قُلُوْبِ	الْمُعْتَدِيْنَ ﴿74﴾	ثُمَّ	بَعَثْنَا
इससे पहले	इसी तरह	हम मोहर लगा देते हैं	दिलों पर	हद से तजावुज़ करने वालों के	फिर	भेजा हमने

مِنْۢ بَعْدِهِمْ	مُّوْسٰى	وَهٰرُوْنَ	اِلٰى فِرْعَوْنَ	وَمَلَا۟ئِهٖ	بِاٰيٰتِنَا
बाद उनके	मूसा	और हारून को	तरफ़ फ़िरऔन	और उसके सरदारों के	साथ अपनी आयात के

فَاسْتَكْبَرُوْا	وَ كَانُوْا	قَوْمًا	مُّجْرِمِيْنَ ﴿75﴾	فَلَمَّا	جَآءَهُمُ	الْحَقُّ
तो उन्होंने तकब्बुर किया	और थे वो	लोग	मुजरिम	तो जब	आया उनके पास	हक़

مِنْ عِنْدِنَا	قَالُوْٓا	اِنَّ	هٰذَا	لَسِحْرٌ	مُّبِيْنٌ ﴿76﴾	قَالَ	مُوْسٰٓى
हमारी तरफ़ से	उन्होंने कहा	यक़ीनन	ये	अलबत्ता जादू है	खुल्लम-खुल्ला	कहा	मूसा ने

اَتَقُوْلُوْنَ	لِلْحَقِّ	لَمَّا	جَآءَكُمْ ؕ	اَسِحْرٌ	هٰذَا ؕ	وَلَا	يُفْلِحُ
क्या तुम कहते हो	हक़ को (जादू)	जब	वो आ गया तुम्हारे पास	क्या जादू है	ये	हालांकि नहीं	फ़लाह पाते

السّٰحِرُوْنَ ﴿77﴾	قَالُوْٓا	اَجِئْتَنَا	لِتَلْفِتَنَا	عَمَّا	وَجَدْنَا	عَلَيْهِ
साहिर/जादूगर	उन्होंने कहा	क्या आया है तू हमारे पास	ताकि तू फेर दे हमें	उससे जो	पाया हमने	उस पर

اٰبَآءَنَا	وَتَكُوْنَ	لَكُمَا	الْكِبْرِيَآءُ	فِى الْاَرْضِ ؕ	وَمَا	نَحْنُ
अपने आबा ओ अजदाद को	और हो जाए	तुम दोनों के लिए	बड़ाई	ज़मीन में	और नहीं	हम

لَكُمَا	بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿78﴾	وَقَالَ	فِرْعَوْنُ	ائْتُوْنِيْ	بِكُلِّ	سٰحِرٍ
तुम दोनों को	मानने वाले	और कहा	फ़िरऔन ने	लाओ मेरे पास	हर	जादूगर को

عَلِيْمٍ ﴿79﴾	فَلَمَّا	جَآءَ	السَّحَرَةُ	قَالَ	لَهُمْ	مُّوْسٰى	اَلْقُوْا	مَآ
जो माहिर हो	तो जब	आ गए	जादूगर	कहा	उनसे	मूसा ने	तुम सब डालो	जो

اَنْتُمْ	مُّلْقُوْنَ ﴿80﴾	فَلَمَّآ	اَلْقَوْا	قَالَ	مُوْسٰى	مَا	جِئْتُمْ
तुम	डालने वाले हो	तो जब	उन्होंने डाला	कहा	मूसा ने	वो जो	लाए हो तुम

بِهٖ ۙ	السِّحْرُ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	سَيُبْطِلُهٗ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُصْلِحُ
जिसको	जादू है	बेशक	अल्लाह	अनक़रीब वो बातिल कर देगा उसे	बेशक	अल्लाह	नहीं वो संवारता

عَمَلَ	الْمُفْسِدِيْنَ ﴿81﴾	وَيُحِقُّ	اللّٰهُ	الْحَقَّ	بِكَلِمٰتِهٖ	وَلَوْ
काम	मुफ़सिदों का	और सच्चा साबित कर दिखाता है	अल्लाह	हक़ को	अपने कलिमात से	और अगरचे

ع 8 12 13

كَرِهَ	الْمُجْرِمُوْنَ ﴿82﴾ ع	فَمَآ	اٰمَنَ	لِمُوْسٰى	اِلَّا	ذُرِّيَّةٌ
नापसंद करें	मुजरिम	तो ना	बात मानी	मूसा की	मगर	चंद नौजवानों ने

مِّنْ قَوْمِهٖ	عَلٰى خَوْفٍ	مِّنْ فِرْعَوْنَ	وَمَلَا۟ئِهِمْ	اَنْ	يَّفْتِنَهُمْ ؕ
उसकी क़ौम में से	ख़ौफ़ की बिना पर	फ़िरऔन से	और उसके सरदारों से	कि	वो फ़ितने में डाल देगा उन्हें

وَاِنَّ	فِرْعَوْنَ	لَعَالٍ	فِي الْاَرْضِ ۚ	وَاِنَّهٗ	لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿83﴾
और बेशक	फ़िरऔन	अलबत्ता सरकश था	ज़मीन में	और बेशक वो	यक़ीनन हद से बढ़ जाने वालों में से था

وَقَالَ	مُوْسٰى	يٰقَوْمِ	اِنْ	كُنْتُمْ	اٰمَنْتُمْ	بِاللّٰهِ	فَعَلَيْهِ
और कहा	मूसा ने	ऐ मेरी क़ौम	अगर	हो तुम	ईमान लाए तुम	अल्लाह पर	तो उसी पर

تَوَكَّلُوْٓا	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّسْلِمِيْنَ ﴿84﴾	فَقَالُوْا	عَلَى اللّٰهِ	تَوَكَّلْنَا ۚ
तुम तवक्कल करो	अगर	हो तुम	फ़रमांबरदार	तो उन्होंने कहा	अल्लाह ही पर	तवक्कल किया हमने

رَبَّنَا	لَا تَجْعَلْنَا	فِتْنَةً	لِّلْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿85﴾	وَنَجِّنَا
ऐ हमारे रब	ना तू बनाना हमें	फ़ितना	उन लोगों के लिए	जो ज़ालिम हैं	और निजात दे हमें

بِرَحْمَتِكَ	مِنَ الْقَوْمِ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿86﴾	وَاَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰى	وَاَخِيْهِ
साथ अपनी रहमत के	उन लोगों से	जो काफ़िर हैं	और वही की हमने	तरफ़ मूसा	और उसके भाई के

اَنْ	تَبَوَّاٰ	لِقَوْمِكُمَا	بِمِصْرَ	بُيُوْتًا	وَّاجْعَلُوْا	بُيُوْتَكُمْ
कि	तुम दोनों मुतय्यन करो	अपनी क़ौम के लिए	मिस्र में	कुछ घर	और बना लो	अपने घरों को

قِبْلَةً	وَّاَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ ؕ	وَبَشِّرِ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿87﴾	وَقَالَ	مُوْسٰى
क़िबला/मरकज़	और क़ायम करो	नमाज़	और ख़ुशख़बरी दो	मोमिनों को	और कहा	मूसा ने

رَبَّنَآ	اِنَّكَ	اٰتَيْتَ	فِرْعَوْنَ	وَمَلَاَهٗ	زِيْنَةً	وَّاَمْوَالًا
ऐ हमारे रब	बेशक तू	दी तूने	फ़िरऔन को	और उसके सरदारों को	ज़ीनत	और माल

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ	رَبَّنَا	لِيُضِلُّوْا	عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ	رَبَّنَا
दुनिया की ज़िंदगी में	ऐ हमारे रब	ताकि वो भटकाऐं	तेरे रास्ते से	ऐ हमारे रब

اطْمِسْ	عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ	وَاشْدُدْ	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	فَلَا	يُؤْمِنُوْا	حَتّٰى
मिटा दे	इनके मालों को	और सख़्ती डाल दे	इनके दिलों पर	तो ना	वो ईमान लाऐं	यहां तक कि

يَرَوُا	الْعَذَابَ	الْاَلِيْمَ ﴿88﴾	قَالَ	قَدْ	اُجِيْبَتْ	دَّعْوَتُكُمَا
वो देख लें	अज़ाब	दर्दनाक	फ़रमाया	तहक़ीक़	क़ुबूल कर ली गई	दुआ तुम दोनों की

فَاسْتَقِيْمَا	وَلَا	تَتَّبِعٰٓنِّ	سَبِيْلَ	الَّذِيْنَ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿89﴾
पस तुम दोनों साबित क़दम रहो	और ना	तुम दोनों हरगिज़ पैरवी करना	रास्ते की	उनके जो	नहीं वो इल्म रखते

وَجٰوَزْنَا	بِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ	الْبَحْرَ	فَاَتْبَعَهُمْ	فِرْعَوْنُ	وَجُنُوْدُهٗ
और पार करा दिया हमने	बनी इस्राईल को	समुन्दर	फिर पीछा किया उनका	फ़िरऔन	और उसके लश्करों ने

بَغْيًا	وَّعَدْوًا ؕ	حَتّٰٓى	اِذَآ	اَدْرَكَهُ	الْغَرَقُ ۙ	قَالَ	اٰمَنْتُ
सरकशी	और ज़्यादती से	यहां तक कि	जब	पा लिया उसे	ग़र्क़ होने ने	वो बोला	मैं ईमान ले आया

اَنَّهٗ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	الَّذِيْٓ	اٰمَنَتْ	بِهٖ	بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ
कि बेशक वो	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही जो	ईमान लाए	जिस पर	बनी इस्राईल

وَاَنَا	مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿90﴾	آٰلْـٰٔنَ	وَقَدْ	عَصَيْتَ	قَبْلُ	وَكُنْتَ
और मैं	मुसलमानों में से हूं	क्या अब	हालांकि तहक़ीक़	नाफ़रमानी की तूने	इससे पहले	और था तू

مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿91﴾	فَالْيَوْمَ	نُنَجِّيْكَ	بِبَدَنِكَ	لِتَكُوْنَ	لِمَنْ
फ़साद करने वालों में से	तो आज	हम बचा लेंगे तुझे	साथ तेरे बदन के	ताकि तू हो जाए	उनके लिए जो

ع 9 10 14

خَلْفَكَ	اٰيَةً ؕ	وَاِنَّ	كَثِيْرًا	مِّنَ النَّاسِ	عَنْ اٰيٰتِنَا	لَغٰفِلُوْنَ ﴿92﴾ ع
तेरे बाद हों	एक निशानी	और बेशक	बहुत से	लोगों में से	हमारी आयात से	अलबत्ता ग़ाफ़िल हैं

وَلَقَدْ	بَوَّاْنَا	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	مُبَوَّاَ	صِدْقٍ	وَّرَزَقْنٰهُمْ
और अलबत्ता तहक़ीक़	ठिकाना दिया हमने	बनी इस्राईल को	ठिकाना	सच्चा/उम्दा	और रिज़्क़ दिया हमने उन्हें

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ	فَمَا	اخْتَلَفُوْا	حَتّٰى	جَآءَهُمُ	الْعِلْمُ ؕ	اِنَّ
पाकीज़ा चीज़ों से	तो नहीं	उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	यहां तक कि	आ गया उनके पास	इल्म	बेशक

رَبَّكَ	يَقْضِيْ	بَيْنَهُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	فِيْمَا	كَانُوْا	فِيْهِ
रब आपका	वो फ़ैसला करेगा	दर्मियान उनके	दिन	क़यामत के	उसमें जो	थे वो	जिस में

يَخْتَلِفُوْنَ ﴿93﴾	فَاِنْ	كُنْتَ	فِيْ شَكٍّ	مِّمَّآ	اَنْزَلْنَآ	اِلَيْكَ
वो इख़्तिलाफ़ करते	फिर अगर	हैं आप	किसी शक में	इसके बारे में जो	नाज़िल किया हमने	तरफ़ आपके

فَسْـَٔلِ	الَّذِيْنَ	يَقْرَءُوْنَ	الْكِتٰبَ	مِنْ قَبْلِكَ ۚ	لَقَدْ	جَآءَكَ
तो पूछ लीजिए	उन लोगों से जो	पढ़ते हैं	किताब	आपसे पहले	अलबत्ता तहक़ीक़	आ गया आपके पास

الْحَقُّ	مِنْ رَّبِّكَ	فَلَا تَكُوْنَنَّ	مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿94﴾	وَلَا تَكُوْنَنَّ
हक़	आपके रब की तरफ़ से	पस हरगिज़ ना आप हों	शक करने वालों में से	और हरगिज़ ना आप हों

مِنَ الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	فَتَكُوْنَ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿95﴾	اِنَّ
उनमें से जिन्होंने	झुठलाया	अल्लाह की आयात को	वरना आप हो जाऐंगे	ख़सारा पाने वालों में से	बेशक

الَّذِيْنَ	حَقَّتْ	عَلَيْهِمْ	كَلِمَتُ	رَبِّكَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿96﴾	وَلَوْ
वो लोग जो	साबित हो गई	उन पर	बात	आपके रब की	नहीं वो ईमान लाऐंगे	और अगरचे

جَآءَتْهُمْ	كُلُّ	اٰيَةٍ	حَتّٰى	يَرَوُا	الْعَذَابَ	الْاَلِيْمَ ﴿97﴾	فَلَوْلَا
आ जाए उनके पास	हर	निशानी	यहां तक कि	वो देख लें	अज़ाब	दर्दनाक	फिर क्यों ना

كَانَتْ	قَرْيَةٌ	اٰمَنَتْ	فَنَفَعَهَآ	اِيْمَانُهَآ	اِلَّا	قَوْمَ	يُوْنُسَ ؕ
हुई	कोई बस्ती	जो ईमान लाई	तो नफ़ा दिया उसे	उसके ईमान ने	सिवाय	क़ौमे	यूनुस के

لَمَّآ	اٰمَنُوْا	كَشَفْنَا	عَنْهُمْ	عَذَابَ	الْخِزْيِ	فِى الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا
जब	वो ईमान लाए	हटा दिया हमने	उन से	अज़ाब	रुसवाई का	ज़िंदगी में	दुनिया की

وَمَتَّعْنٰهُمْ	اِلٰى حِيْنٍ ﴿98﴾	وَلَوْ	شَآءَ	رَبُّكَ	لَاٰمَنَ	مَنْ
और फ़ायदा दिया हमने उन्हें	एक मुद्दत तक	और अगर	चाहता	रब आपका	अलबत्ता ईमान ले आते	जो

فِى الْاَرْضِ	كُلُّهُمْ	جَمِيْعًا ؕ	اَفَاَنْتَ	تُكْرِهُ	النَّاسَ	حَتّٰى	يَكُوْنُوْا
ज़मीन में हैं	सबके सब	इकट्ठे	क्या भला आप	मजबूर करेंगे	लोगों को	यहां तक कि	वो हो जाऐं

مُؤْمِنِيْنَ ﴿99﴾	وَمَا	كَانَ	لِنَفْسٍ	اَنْ	تُؤْمِنَ	اِلَّا	بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
ईमान लाने वाले	और नहीं	है	किसी नफ़्स के लिए	कि	वो ईमान लाए	मगर	अल्लाह के इज़्न से

وَيَجْعَلُ	الرِّجْسَ	عَلَى الَّذِيْنَ	لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿100﴾	قُلِ	انْظُرُوْا	مَاذَا
और वो डाल देता है	गंदगी को	उन पर जो	नहीं वो अक़्ल रखते	कह दीजिए	देखो	क्या कुछ है

فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَمَا	تُغْنِي	الْاٰيٰتُ	وَالنُّذُرُ	عَنْ قَوْمٍ
आसमानों में	और ज़मीन में	और नहीं	फ़ायदा देतीं	आयात	और डरावे	उन लोगों को जो

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿101﴾	فَهَلْ	يَنْتَظِرُوْنَ	اِلَّا	مِثْلَ	اَيَّامِ	الَّذِيْنَ	خَلَوْا
नहीं वो ईमान लाते	तो नहीं	वो इंतिज़ार कर रहे	मगर	मानिंद	दिनों के	उन लोगों के जो	गुज़र चुके हैं

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	قُلْ	فَانْتَظِرُوْٓا	اِنِّيْ	مَعَكُمْ	مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿102﴾
उनसे पहले	कह दीजिए	पस इंतिज़ार करो	बेशक मैं	साथ तुम्हारे	इंतिज़ार करने वालों में से हूं

ثُمَّ	نُنَجِّيْ	رُسُلَنَا	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	كَذٰلِكَ ۚ	حَقًّا	عَلَيْنَا
फिर	हम निजात देते हैं	अपने रसूलों को	और उनको जो	ईमान लाए	इसी तरह	हक़ है	हम पर

نُنْجِ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾ ع	قُلْ	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ	اِنْ	كُنْتُمْ	فِيْ شَكٍّ
कि हम निजात दें	मोमिनों को	कह दीजिए	ऐ लोगो	अगर	हो तुम	किसी शक में

ع 10 11 15

مِّنْ دِيْنِيْ	فَلَآ	اَعْبُدُ	الَّذِيْنَ	تَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَلٰكِنْ
मेरे दीन में	पस नहीं	मैं इबादत करता	जिनकी	तुम इबादत करते हो	सिवाए	अल्लाह के	और लेकिन

اَعْبُدُ	اللّٰهَ	الَّذِيْ	يَتَوَفّٰىكُمْ ۖ	وَاُمِرْتُ	اَنْ	اَكُوْنَ
मैं इबादत करता हूं	अल्लाह की	वो जो	फ़ौत करता है तुम्हें	और हुक्म दिया गया हूं मैं	कि	मैं हो जाऊं

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿104﴾ لا	وَاَنْ	اَقِمْ	وَجْهَكَ	لِلدِّيْنِ	حَنِيْفًا ۚ	وَلَا تَكُوْنَنَّ
ईमान लाने वालों में से	और ये कि	क़ायम रखिए	चेहरा अपना	दीन के लिए	यकसू होकर	और हरगिज़ ना आप हों

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿105﴾	وَلَا	تَدْعُ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مَا	لَا يَنْفَعُكَ
मुशरिकों में से	और ना	आप पुकारिए	सिवाय	अल्लाह के	उसे जो	ना फ़ायदा दे सकता है आपको

وَلَا	يَضُرُّكَ ۚ	فَاِنْ	فَعَلْتَ	فَاِنَّكَ	اِذًا	مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿106﴾
और ना	वो नुक़्सान दे सकता है आपको	फिर अगर	किया आपने (ऐसा)	तो बेशक आप	उस वक़्त	ज़ालिमों में से होंगे

وَ اِنْ	هُوَ ج	اِلَّا	لَهٗٓ	كَاشِفَ	فَلَا	بِضُرٍّ	اللّٰهُ	يَّمْسَسْكَ	وَ اِنْ
और अगर	वो ही	मगर	उसे	कोई हटाने वाला	तो नहीं	कोई तकलीफ़	अल्लाह	पहुंचाए आपको	और अगर

مَنْ	بِهٖ	يُصِيْبُ	لِفَضْلِهٖ ط	رَآدَّ	فَلَا	بِخَيْرٍ	يُّرِدْكَ
जिसे	उसे	वो पहुंचाता है	उसके फ़ज़्ल को	कोई फेरने वाला	तो नहीं	किसी भलाई का	वो इरादा करे आपके साथ

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ	قُلْ	الرَّحِيْمُ (107)	الْغَفُوْرُ	وَهُوَ	مِنْ عِبَادِهٖ ط	يَّشَآءُ
ऐ लोगो	कह दीजिए	निहायत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने वाला है	और वो	अपने बंदों में से	वो चाहता है

فَاِنَّمَا	اهْتَدٰى	فَمَنِ	مِنْ رَّبِّكُمْ ج	الْحَقُّ	جَآءَكُمُ	قَدْ
तो बेशक	हिदायत पाई	तो जिसने	तुम्हारे रब की तरफ़ से	हक़	आ चुका तुम्हारे पास	तहक़ीक़

عَلَيْهَا ج	يَضِلُّ	فَاِنَّمَا	ضَلَّ	وَمَنْ	لِنَفْسِهٖ ج	يَهْتَدِىْ
अपने(नफ़्स) पर	वो गुमराह होगा	तो बेशक	गुमराह हुआ	और जो	अपने नफ़्स के लिए	वो हिदायत पाएगा

اِلَيْكَ	يُوْحٰٓى	مَا	وَاتَّبِعْ	بِوَكِيْلٍ (108) ط	عَلَيْكُمْ	اَنَا	وَمَآ
तरफ़ आपके	वही की जाती है	उसकी जो	और पैरवी कीजिए	कोई ज़िम्मेदार	तुम पर	मैं	और नहीं

الْحٰكِمِيْنَ (109) ع	خَيْرُ	وَهُوَ	اللّٰهُ ج صلے	يَحْكُمَ	حَتّٰى	وَاصْبِرْ
सब फ़ैसला करने वालों में से	बेहतर है	और वो	अल्लाह	फ़ैसला कर दे	यहां तक कि	और सब्र कीजिए

ع 11 6 16

رُكُوْعَاتُهَا: 10 — 11 سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ 52 — اٰيَاتُهَا: 123

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مِنْ لَّدُنْ	فُصِّلَتْ	ثُمَّ	اٰيٰتُهٗ	اُحْكِمَتْ	كِتٰبٌ	الٓرٰ قف
तरफ़ से	खोल कर बयान की गईं	फिर	आयात उसकी	पुख़्ता की गई हैं	एक किताब है	الٓرٰ

لَكُمْ	اِنَّنِىْ	اللّٰهَ ط	اِلَّا	تَعْبُدُوْٓا	اَلَّا	خَبِيْرٍ (1) لا	حَكِيْمٍ
तुम्हारे लिए	बेशक मैं	अल्लाह की	मगर	तुम इबादत करो	कि ना	ख़ूब बाख़बर के	बहुत हिक्मत वाले

مِّنْهُ	نَذِيْرٌ	وَّبَشِيْرٌ ②	وَّاَنِ	اسْتَغْفِرُوْا	رَبَّكُمْ	ثُمَّ
उसकी तरफ़ से	डराने वाला	और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं	और ये कि	तुम बख़्शिश मांगो	अपने रब से	फिर

تُوْبُوْٓا	اِلَيْهِ	يُمَتِّعْكُمْ	مَّتَاعًا	حَسَنًا	اِلٰٓى اَجَلٍ	مُّسَمًّى
तुम तौबा करो	तरफ़ उसके	वो फ़ायदा देगा तुम्हें	फ़ायदा	अच्छा	एक मुद्दत तक	मुक़र्रर

وَّيُؤْتِ	كُلَّ	ذِىْ فَضْلٍ	فَضْلَهٗ ؕ	وَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاِنِّيْٓ	اَخَافُ
और वो देगा	हर	साहिबे फ़ज़्ल को	फ़ज़्ल उसका	और अगर	तुम मुंह फेरोगे	तो बेशक मैं	मैं डरता हूं

عَلَيْكُمْ	عَذَابَ	يَوْمٍ كَبِيْرٍ ③	اِلَى اللّٰهِ	مَرْجِعُكُمْ ۚ	وَهُوَ	عَلٰى
तुम पर	अज़ाब से	बड़े दिन के	तरफ़ अल्लाह ही के	लौटना है तुम्हारा	और वो	ऊपर

كُلِّ	شَىْءٍ	قَدِيْرٌ ④	اَلَآ	اِنَّهُمْ	يَثْنُوْنَ	صُدُوْرَهُمْ
हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	ख़बरदार	बेशक वो	वो दोहरे करते हैं	सीने अपने

لِيَسْتَخْفُوْا	مِنْهُ ؕ	اَلَا	حِيْنَ	يَسْتَغْشُوْنَ	ثِيَابَهُمْ ۙ	يَعْلَمُ
ताकि वो छुप सकें	उस से	ख़बरदार	जिस वक़्त	वो ढांपते हैं	कपड़े अपने	वो जानता है

مَا	يُسِرُّوْنَ	وَمَا	يُعْلِنُوْنَ ۚ	اِنَّهٗ	عَلِيْمٌۢ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑤
जो	वो छुपाते हैं	और जो	वो ज़ाहिर करते हैं	बेशक वो	ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले (भेद)